श्री धनावंशी हित

धनावंशी चेतना की मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 6 जून 2020 मूल्य : 20 रु.

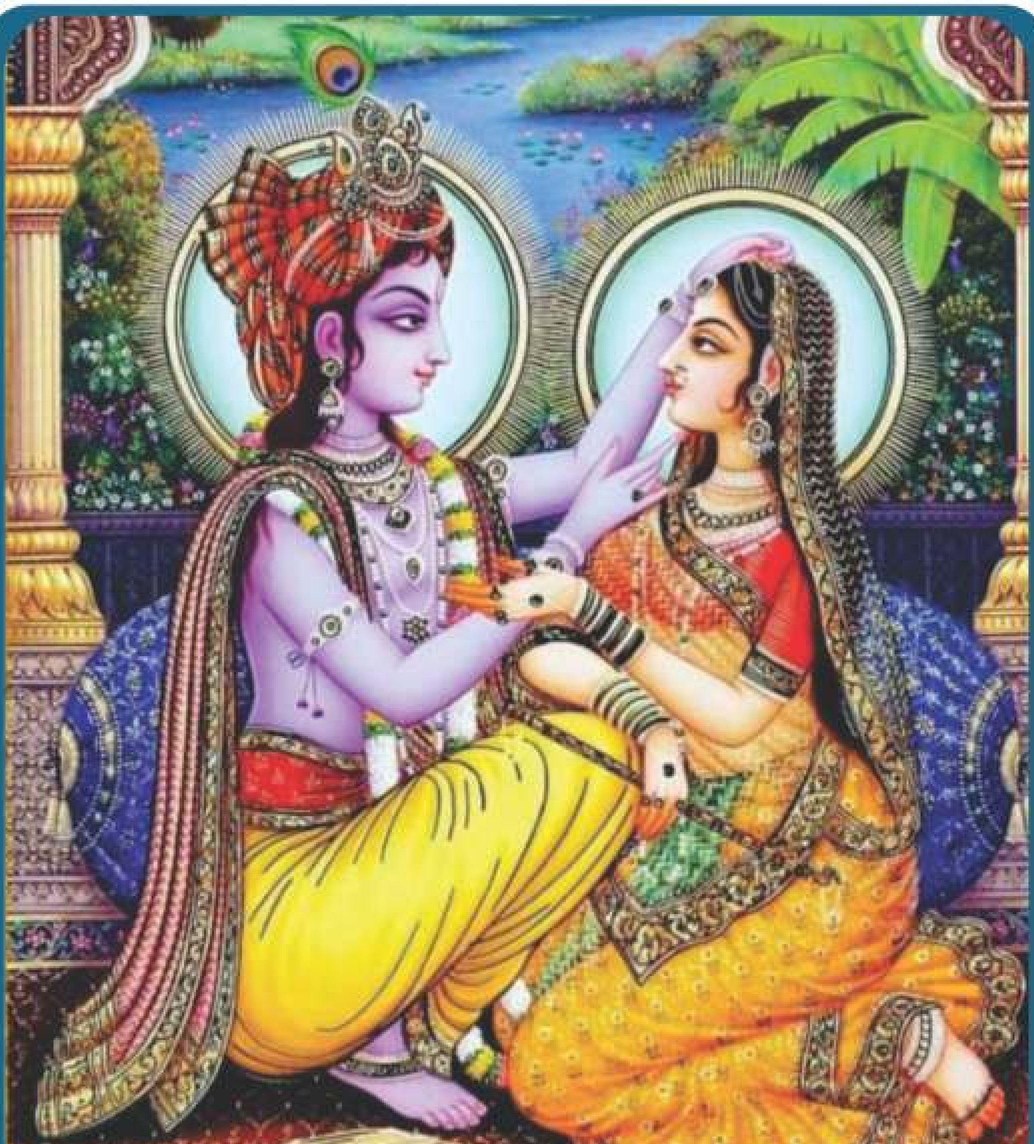

तालाबंदी संकट भी और सबक भी

श्री धनावंश का बौद्धिक उत्कर्ष

धनाजी और धनावंश

धनावंशीय नारी

श्री धनावंशी हित के प्रकाशन
पर हार्दिक शुभकामनाएं

श्री गोपालदासजी थावरिया
सामाजिक कार्यकर्ता
M.: 9982409182

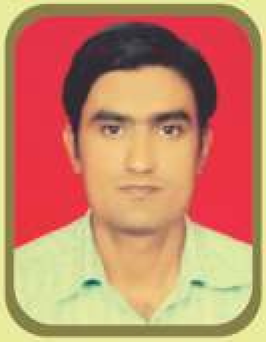

महावीरप्रसाद	**कन्हैयालाल**	**पवनकुमार**	**अशोककुमार**
M.: 9414417182	M.: 9983573598	M.: 8949394249	M.: 9024613181

गोपालदास जनरल एण्ड क्लोथ स्टोर, थावरिया
श्रीराम कृषि सेवा केन्द्र, नोखा
जी.डी. पेट्रोलियम सर्विस, काकड़ा
जी.डी. गारमेन्ट्स, बालाजी मार्केट, नोखा

पावन सन्निधि
श्री ठाकुरजी महाराज
भक्त शिरोमणि श्री धनाजी

मानद परामर्श
परिव्राजक श्रीसीतारामदास स्वामी

सम्पादक एवं प्रकाशक
चेतन स्वामी

सहायक सम्पादक
प्रशांत कुमार स्वामी, फतेहपुर
श्रीधर स्वामी, सुजानगढ़
(अवैतनिक)

अकाउंट विवरण
Dhanavanshi Prakashan
A/c No. - 38917623537
Bank - State Bank of India
Branch - Sridungargarh
IFSC code - SBIN0031141

सम्पादकीय कार्यालय
श्री धनावंशी हित
धनावंशी प्रकाशन, कालूबास,
श्रीडूंगरगढ़-331803
(बीकानेर) राज.
M.: 9461037562
email:chetanswami57@gmail.com

सम्पादक प्रकाशक
चेतन स्वामी द्वारा प्रकाशित
तथा महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़
से मुद्रित।

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के हैं। उनसे सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। रचना की मौलिकता व वैधता का दायित्व स्वयं लेखक का है, विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र श्रीडूंगरगढ़ रहेगा।

मूल्य : एक प्रति 20/- रु.
वार्षिक 200/- रु.

श्री धनावंशी हित

धनावंशी चेतना की मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 6 जून 2020 मूल्य : 20/- रुपये

धनाजी महाराज की स्तुति

धनाजी म्हारा भगतां रा सिरमौर।
आप भगति रो अमर च्यानणो,उजाळ्यो च्यारूं ओर।।
सेवा पूजा और बंदगी जिणरो नीं कोई छेर।
सैंदै प्रगट्या भगत मन रीझ्या आप ही नंदकिशोर।।
आतमवासी उभा होग्या हरख्या हिवड़ै रा मोर ।
गाय चराई खेत रुखाळ्यो संशय संको न चोर।।
बीज बांट साधां नै पोख्या होकर आप विभोर ।
बिन बाह्यां ही इसड़ो निपज्यो ज्यांरो छेह न छोर।।
धनावंश री जोत जगाई सिंवरयो सांवरो चितचोर।
जात कड़म्बै जाग जगाई राख्यो भगति रो जोर।।
आप करयो उपदेस भलेरो असंग सूं बांधो डोर।
छोड जगत जंजाळ वैरागी लिव राखो ठाकुर ओर।।
चेतन चेत करो जग मांहि महिमा भगत री जोर।
धनावंशी जो धन्य धन्य है उणरै गुरू नहीं और।।
धनाजी म्हारा भगतां रा सिरमौर।।

अनुक्रमणिका

* सम्पादकीय-
  धनावंश की भूल/04
* समाचार-/05-06
* आलेख-
  तालाबंदी संकट भी और सबक भी/07
  समाजोत्थान के लिए पांचसूत्री कार्यक्रम/08
  समाज के विकास में युवा शक्ति की भूमिका/10
  धनावंश का बौद्धिक उत्कर्ष/12
  धनाजी और धनावंश/13
  समाज को आगे बढ़ाने के प्रयास/15
  धार्मिक मान्यताओं का करें पालन/17
  धनावंश के उत्थान में अध्यापक की भूमिका/22
  धनावंशीय नारी/24
  धनावंश से प्राथमिक अपेक्षाएं/27
* कहानी- बंद तिजोरी/11
* व्यक्ति विशेष - श्री देवाराम स्वामी/19
* आपके पत्र आपकी भावनाएं/28

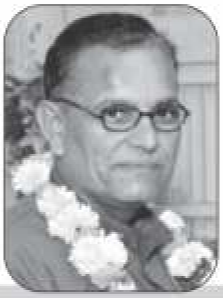

सम्पादकीय

धनावंश की भूल

धनावंश सम्प्रदाय की व्यापक पहचान होनी चाहिए थी-यह किस की आकांक्षा नहीं है? पर दुख इस बात का है कि वैष्णव सम्प्रदायों में यह उतना चर्चित और ख्याति प्राप्त नहीं है । इसका कारण हमें अपनी मनोवृत्ति में ही खोजना पड़ेगा। बहुत से धार्मिक सम्प्रदाय देश-विदेश में चर्चित एवम् सम्मानित हैं। धनावंश भी सुपूजित होना चाहिए था। धनावंश ख्याति नहीं प्राप्त कर सका। जबकि इस पंथ के अधिष्ठाता-प्रवर्तक भक्त शिरोमणि धनाजी महाराज की ख्याति आज भी भक्त समुदाय में तनिक भी कम नहीं है और उनकी छवि तनिक भी धूमिल नहीं हुई है। जहां भी भगवद् अनुग्रह की बात चलती है। जहां भी भगवद् विश्वास की बात चलती है। बड़ी श्रद्धा से धनाजी महाराज को याद किया जाता है। हम धनाजी से दूरी क्यों बरतें ।दूसरी जाति समुदाय के लोग पूजते हैं। यह उनकी महानता है,पर हमारे तो वे अपने थे और आज भी हैं--हम उन्हें कैसे भूल सकते हैं?

यह बहुत कड़वा सच है कि आज धनावंश की व्यापक पहचान इसीलिए नहीं क्योंकि उसने अपनी पहचान के आधार को ही विस्मृत कर रखा है। यह एक मार्मिक तथ्य है-जिससे हम आंख मुंदे हुए हैं।

हम अगर धनावंश को उत्थान के रास्ते पर लाने के इच्छुक हैं तो वह रास्ता धनाजी से होकर ही आता है। धनावंश धार्मिक सम्प्रदाय होकर अधार्मिकों जैसा आचरण करे-इसे कौन उचित बताएगा। अयोध्या में भगवान श्रीराम की जन्मभूमि को कोई नकारता रहे कि अयोध्या में भगवान राम नहीं जन्मे तो यह बात जितनी मिथ्या है-उतनी ही मिथ्या यह बात भी है कि धनावंश का धनाजी से कोई नाता नहीं है। सच्ची बात को लम्बे समय तक नकारना धनावंश के लिए शुभ नहीं है । हम धनावंशियों को इसके लिए पूरे प्रयत्न के साथ खड़े होना चाहिए।

कृपाकांक्षी
चेतन स्वामी

अनुरोध

समाज में जरुरी है परिव्राजक

प्रिय धनावंशी बंधुओं
जरा गौर करें ।

धनावंश सम्प्रदाय में समाज के धार्मिक आचरणों- कथाओं-विचारों-मान्यताओं तथा अन्यान्य समाजोपयोगी बातें बताने के लिए परिव्राजक महंतों की अति आवश्यकता है। सभी सम्प्रदायों में कुछ भ्रमणशील साधु होते हैं जो अपने समुदायों में घूम-घूमकर समाज की बातें बताते हैं -अपने समाज के जरूरी आचरणों से अवगत कराते हैं-अपने समाज की धार्मिक बातें बताते हैं-उन्हें सत्संग आदि कराते हैं-उन्हें कल्याण का मार्ग सुझाते हैं। ऐसा करने पर समाज प्रबोधित होता है। चूंकि परिव्राजक के लिए निहंग या ब्रह्मचारी होना आवश्यक नहीं है- इसलिए इस व्यवस्था को आसानी से अपनाया जा सकता है। परिव्राजक एक तरह से गृहस्थ का वानप्रस्थी रूप ही होता है। होता तो वह संत ही है। वह समाज के लोगों के लिए एक योजक कड़ी है। समाज को भी चाहिए कि वह परिव्राजक संतों को पूरा मान-सम्मान प्रदान करे। वर्तमान में हमारे समाज में केवल एक ही परिव्राजक संत श्री सीताराम दास जी हैं-वे प्राण प्रण से समाज की सेवा में लगे हुए हैं। भ्रमणशील रहते हैं और निर्भीकता से पंथ और धर्म की बात कहते हैं। कतिपय कुछ और संत स्वभाव के जनों को भी परिव्राजक के रूप में समाज का हित करना चाहिए। इस कार्य के लिए स्वेच्छा से अपना योगदान करनेवाले प्रबुद्ध जनों को आगे आना चाहिए। ज्यों-ज्यों युग में घोर भौतिकताओं का प्रसार होता है। इसका सीधा प्रहार हमारे धार्मिक ढांचे पर और परम्पराओं पर पड़ता है। जिस समाज में प्रबोधित करनेवाले लोग नहीं हैं-उनकी समस्त स्थितियों का आप अध्ययन कर सकते हैं।

जिन्दगी की राह तो बड़ी सीधी है, उल्टे सीधे मोड़ तो सारे मन के हैं।

समाचार

कोरोना वॉरियर्स का हुआ सम्मान

मेड़तासिटी निवासी धनावंशी स्वामी समाज के सक्रिय कार्यकर्ता एवम् सहयोगी श्रीबस्तीरामजी स्वामी का कोरोना महामारी के इस संकटकाल में निस्वार्थ सामाजिक सेवाओं के उपलक्ष में मेड़तासिटी की दो अलग-अलग संस्थाएं अखिल भारतीय हिन्दू युवा मोर्चा तथा हिन्दू स्वराज्य सेना ने प्रशस्ति पत्र भेंट कर उनका सम्मान किया है। उनके इस सम्मान से धनावंशी स्वामी समाज गौरवान्वित हुआ है। भक्त शिरोमणि धनाजी महाराज उन पर असीम कृपा वर्षण करते रहें-यही कामना।

बजरंगदास का सम्मान

डेगाना-पुलिस वृत कार्यालय में सेवारत श्रीबजरंगदास स्वामी-कांस्टेबल का नागौर जिला खाडल विप्र संगठन-कुचामनसिटी ने सेवा यौद्धा सम्मान प्रदान कर सम्मानित किया है। श्री बजरंगदास ने एक निष्ठावान पुलिस कर्मी के रूप में कौरोना महामारी के इस संकटकाल में अपनी सेवाएं प्रदान की। उनके इस सम्मान से समाज हर्षित हुआ है।

भींवादास स्वामी को वन-डे वंडर का सम्मान

डीडवाना के भींवादासजी स्वामी को जीवन बीमा निगम की ओर से प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया है। एल आई सी की जीवन शांति सिंगल पॉलिसी के तहत एक ही दिन में बीस लाख रुपये का प्रीमियम जमा करवा कर उन्होंने एक उल्लेखनीय कार्य किया। उन्हें वन डे वंडर सम्मान दिया गया है। धनावंशी स्वामी समाज आपकी इस उपलब्धि पर हर्षित हुआ है । बधाई ।

दादोजी महाराज कानड़दासजी के मंदिर का विस्तार

बीदासर के निकट स्थित गांव स्वामियों की ढाणी में कड़वा जाति के स्वामियों के पूर्वज कानड़दासजी दादोजी के मंदिर के जीर्णोद्धार तथा विस्तार का काम प्रारंभ हो चुका है।

यहां मंदिर परिसर में 65 गुणा 55 फीट का विशाल सभागार निर्माणाधीन है,वहीं दादोजी के मंदिर का भी विस्तार किया जाएगा। स्वामियों की ढाणी के निवासी एवम धनवंश के सामाजिक कार्यकर्ता रामचन्द्रजी स्वामी ने बताया कि इस निर्माण कार्य में लगभग तीस लाख रुपये की राशि खर्च होगी,जिसे सभी परिवार जन खर्च करेंगे। अगले एक दो माह में यह कार्य सम्पन्न हो जाएगा।

गांव के सामाजिक कार्यकर्ता बनवारी लाल स्वामी ने बताया कि दादोजी कानड़दासजी चामत्कारिक पुरूष थे। उनके इस मंदिर परिसर में अक्सर धार्मिक आयोजन होते रहते हैं। यहां साधुओं के ठहरने के लिए ऊपर दो कमरे बनाए जाने की योजना है ।

छोड़िये शिकायत, शुक्रिया अदा कीजिए, जितना है पास, पहले उसका मजा लीजिए।

समाचार

श्रीपूनरासर हनुमानजी पर एक अनुपम ग्रंथ

श्री पूनरासर हनुमान सुयश

बड़े आकार में इंपोरटेड कागज पर मल्टीकलर में छपा हुआ

मूल्य 999/- रुपये, किन्तु आपको आधी कीमत यानि 500/- रुपये में प्रदान किया जाएगा।

रजिस्टर्ड डाक खर्च के 50/- रुपये अलग। **सम्पर्क करें-9461037564**

बालाजी प्रकाशन

फतेहपुर शेखावाटी (सीकर)

अर्जुनदास स्वामी का सम्मान

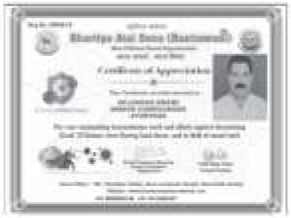

विगत दो माह से सरदारशहर के आयुर्वेदिक महाविद्यालय में बनाए गए क्वारन्टाइन सेंटर में कर्मठतापूर्वक सेवाएं देने पर हरियासर के उपवैद्य श्री अर्जुन दासजी स्वामी को भारतीय अटल सेना ने प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया है। उनकी इस अथक मानव सेवा से धनावंशी स्वामी समाज को गर्व हुआ है। आपके स्वास्थ्य की कामना।

पंडवाला के मुंडेल परिवार के छह सदस्य कोरोना वॉरियर्स के रूप में दे रहे सेवाएं

अलग-अलग क्षेत्र में कोरोना संकट में योद्धा बनकर उभरे मुंडेल परिवार के सदस्य

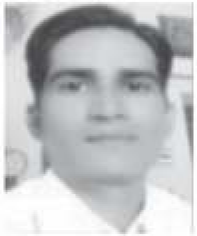

डेगाना। डेगाना उपखंड के ग्राम पंडवाला के एक ही परिवार के 6 सदस्य कोराना संकट में इन दिनों लगातार अलग-अलग क्षेत्रों में सेवाएं करते हुए योद्धा बनकर उभरे है। समाजसेवी नेमाराम प्रजापत ने बताया कि ग्राम पंडवाला के एक ही परिवार के 6 सदस्यों में से बजरंगदास मुंडेल राजस्थान पुलिस में डीवाईएसपी ऑफीस डेगाना में कार्यरत है। इसी प्रकार भाई राधेश्याम मुंडेल नर्स ग्रेड द्वितीय खुड़ीकला में लगातार सेवाएं दे रहे है। भाभी विजयलक्ष्मी मुंडेल नर्स ग्रेड द्वितीय पुंदलू में इन दिनों सेवाएं देकर कोराना योद्धा के रूप में उभरी है। जबकि राजेन्द्र मुंडेल व मंजू मुंडेल राजस्थान पुलिस जोधपुर में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। भगवानदास एम्स नर्सिंग ऑफिसर जोधपुर में कार्यरत है। यह सभी परिवार के सदस्य अलग-अलग क्षेत्रों में कोराना योद्धा के रूप में लगातार सेवाएं दे रहे हैं।

समाजसेवी नेमाराम प्रजापत ने बताया कि इस प्रकार आपदा व संकट के समय में सभी लोग देश की सेवा कर रहे हैं। प्रशासन का सहयोग कर अपना फर्ज अदा कर रहे हैं। इन सभी परिवार के एक साथ सभी सदस्यों के योद्धा बनकर उभरने पर ग्रामीणों ने भी गर्व महसूस करते हुए हर्ष जताया है।

जानकारी किसी भी उम्र में आ सकती है, मगर अनुभव आज भी उम्र के इंतजार करता है।

तालाबंदी

संकट भी और सबक भी

बृजदास स्वामी

घटनाएं यूं ही घटित नहीं होती। उनके घटने के कारण भी होते है और परिणाम भी और उसके उपरान्त सबक भी। इसलिए हर व्यक्ति को उन कारणों का विश्लेषण और परिणाम का धैर्यपूर्वक सामना करके घटनाओं से सीख लेकर आगे बढ़ना चाहिए।

वैश्विक महामारी से तालाबन्दी, बेरोजगारी, आर्थिक पतन, भूखमरी, अकाल मृत्यु आदि भयंकर परिणाम मानव जाति भोग रही है। इसलिए इसके कारण और सबक भी विचारणीय है।

आहार (खानपान) की अशुद्धि इस महामारी का शुरूआती कारण बताया गया है। हमें आहार की शुद्धता का विशेष ध्यान रखना चाहिए, सन्तुलित और शुद्ध भोजन ही रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। अन्न उत्पादन के समय खेतों में जहरीले रसायन की जगह गोबर-गौमुत्र की खाद का प्रयोग हो। खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता का हर हाल में ध्यान रखा जाए। मिलावट पर नियंत्रण रखा जाए।

व्यसन बहुत सी बीमारियों का कारण भी है और आर्थिक क्षति भी। बीमार व्यक्ति पर इस महामारी का प्रकोप अधिक होता है, इसलिए हमें व्यसन-मुक्त होकर बीमारी-महामारी के साथ-साथ आर्थिक नुकसान से भी बचना चाहिए। प्रकृति का अनुचित दोहन ना हो, जिससे प्राकृतिक विक्षोभ से बचा जा सके। आर्थिक विकास की अंधी दौड़ में प्रकृति के विनाश की अनदेखी ना हो।

महामारी के सामने सब विवश हैं, इसलिए अपनी अमीरी के घमण्ड में नहीं रहना चाहिए। मेरे एक मित्र कहते थे कि मैं तो अरबपति हूँ, इसलिए जब भी यहां अनुकूल नहीं होगा तो अमेरिका (विदेश) जाकर बस जाऊंगा मुझे क्या फर्क पड़ता है। आज के हालात से विवश है और हमें यह सीखना चाहिए कि फर्क सभी को पड़ता है। इसलिए गलतफहमी में न रहे और विनम्र बनें ऐसी विपत्ति के समय में निजी स्वार्थ त्यागकर मानव सेवा और लोककल्याण के विषय में सोचना चाहिए। जिन भामाशाहों ने अपना सहयोग दिया है उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। हमारे प्रधानमंत्री ने अमेरिका को दवा आपूर्ति करके जनकल्याण और विश्व समुदाय के प्रति उदारता का परिचय दिया है जो प्रशंसनीय है।

फिजूल खर्ची से हमेशा बचना चाहिए जिससे ऐसी प्राकृतिक विपदा झेल सकें। बचत के प्रति गंभीर नहीं होने के कारण एक महिने की तालाबंदी से ही निम्न और मध्यम वर्गीय लोगों ने चिंता और छटपटाहट है। इसलिए मितव्ययी बनें, दिखावा ना करें। आपातकालीन योजना भी बनानी चाहिए। यह भी सबक है कि बाहरी चकाचौंध, मल्टीप्लेक्स-मॉल, महानगरीय जीवनशैली सब कुछ नहीं है। अपनी ग्रामीण संस्कृति, खेत खलिहान, पशुधन और पुश्तैनी काम धंधे सहेजकर रखें। शास्त्र अध्ययन कितना महत्त्वपूर्ण है, यह भी सीखना चाहिए। समय मिलने पर ही शास्त्र पढ़ने की बजाय समय निकालकर शास्त्राध्ययन करना चाहिए। रामायण, महाभारत, गीता आदि हमारे जीवन के हर पहलू को छूने वाले ग्रन्थ है। दूरदर्शन पर इनका प्रसारण हुआ तब नई पीढ़ी को पता लगा कि हमारे पौराणिक ग्रन्थ क्या हैं। अगर इन ग्रन्थों को पढ़ें और प्रेरणा लें तो जीवन सहज बन सकता है। सबक यह भी है कि आपसी सहयोग हमेशा बनाये रखें। व्यक्तिगत सहयोग भी और सरकारी तन्त्र के साथ भी। सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय की भावना रखे। यह आपसी सहयोग का ही परिणाम है कि हमारा देश इस महा-त्रासदी से उबर रहा है। जहां विकसित देशों में भी हाहाकर मचा है वहीं भारत में स्थिति नियंत्रित है।

सरकार से अपेक्षा कि इस आपदा से निपटने के लिए बेहतरीन प्रबन्धन करे और उसके उपरान्त हर प्रभावित व्यक्ति के लिए उचित राहत प्रदान करे ताकि सबका जीवन सुचारू हो।

सफल वही है जो वादे निभाता है, तुरंत अपनी गलती मान लेता और समय की कीमत समझता है।

अगर हमने कौम (सम्प्रदाय) को संकीर्णताओं से ऊपर नहीं उठाया तो अपना पतन निश्चित है। इसके लिए हमें अपने समाज को आडम्बर और रूढ़ियों से बाहर निकालना होगा। इसके लिए हमें कर्मवादी ही बनना होगा और यह सब शिक्षा के प्रसार से ही सम्भव हो पायेगा। हमें अपनी नई पीढ़ी को कर्मवादी बनाना होगा।

महेश स्वामी
बाडेट, रामगढ़ शेखावाटी

समाजोत्थान के लिए पांच सूत्री कार्यक्रम

समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार है। परिवार के बाद अपनी कौम और कई कौम मिलकर समाज बनता है। आज समाज की ये छोटी-छोटी इकाइयां ही मानवता को बचा रही है। जो कौम (सम्प्रदाय) जितनी ज्यादा सशक्त होगी, वही कौम संघर्ष करके अपने को, समाज को और सम्पूर्ण मानवता को बचा सकती है। धनावंशी सम्प्रदाय धना भगत से हुआ है। धनाजी ग्रहस्थी सीधे-सादे सरल मनुष्य थे। धनाजी कर्मकाण्ड के बजाय कर्मवाद में विश्वास करते थे। मानव धर्म के हिमायती थे। आत्मा ही उनका ईश्वर और धर्म थी।

अब बात आती है धनावंशी कौम के विकास और प्रगति की। अगर हमने कौम (सम्प्रदाय) को संकीर्णताओं से ऊपर नहीं उठाया तो अपना पतन निश्चित है। इसके लिए हमें अपने समाज को आडम्बर और रूढ़ियों से बाहर निकलाना होगा। इसके लिए हमें कर्मवादी ही बनना होगा और यह सब शिक्षा के प्रसार से ही सम्भव हो पायेगा। हमें अपनी नई पीढ़ी को कर्मवादी बनाना होगा। इसकी एक ही औषधी है वह है शिक्षा।

आज हमारे समाज व सम्प्रदाय में झूठी प्रतिष्ठा तथा झूठी शानो-शौकत के लिए खर्चीली सामाजिक परम्पराएं मौजूद हैं जो हमारे लिए अभिशाप हैं। आज की महती आवश्यकता है समाज सुधार। समाजोत्थान के लिए पांच सूत्री कार्यक्रम की आवश्यकता है जो इस प्रकार है।

1. विवाहोत्सव सुधार : बाल-विवाह, अनमेल विवाह ना किया जावे। बारात में अधिकतम 25 व्यक्ति हो। किसी भी रूप में दान-दहेज का लेना व देना पूर्णत: निषिद्ध हो। टीका, शगुन, समठुनी एवं अन्य रिवाज रस्म के बहाने किसी प्रकार लेनदेन नहीं किया जावे। विवाहोत्सव यथासंभव दिन में किया जाये जिससे कई प्रकार के अपव्यय से बचा जा सकता है।
2. जन्मोत्सव सुधार : जन्मोत्सव पर छुछक, जलवा पूजन आदि रीति रिवाज के नाम पर लेनदेन न किया जावे। जन्मोत्सव पर समाज हित में दान किया जाये।
3. मृत्युभोज निवारण : मृत्यु के शोक संतप्त वातावरण में मृत्युभोज अथवा औसर का कोई औचित्य नहीं है। इस प्रथा को बंद किया जाये। दिवंगत आत्मा की पुण्य-स्मृति में समाज में दान दिया जाये।
4. नशामुक्ति अभियान : हमारे समाज में नशाखोरी की लत बढ़ती जा रही है। नई पीढ़ी में यह लत सुरसा के मुँह की तरह बढ़ रही है। कई सारे मादक पदार्थों की लत ने लाखों परिवारों को बर्बाद कर दिया है। नशीले पदार्थों के सेवन से नैतिक पतन व मानवीय मूल्यों का ह्रास तीव्रगति से हो रहा है। अत:

यूं ही छोटी सी बात पर ताल्लुकात बिगड़ जाते है, मुद्दा होता है सही क्या है,
और लोग सही कौन है, पर उलझ जाते है।

इसके विरुद्ध अभियान चलाना चाहिए।

5. मुकदमेंबाजी : आज अपने समाज में युवा पीढ़ी में नशाखोरी, अहम आदि के कारण अपराधीकरण का प्रसार हो रहा है। परिणामस्वरूप मुकदमेबाजी अधिक हो रही है। समाज में आपस में लड़ाई-झगड़ों, मनमुटाव, दीवानी व फौजदारी मुकदमों के कारण धन का भारी अपव्यय व शक्ति का ह्रास हो रहा है। खानदान बर्बाद हो रहे हैं, समाज टूट रहा है। अतः यह आवश्यक है कि इस प्रकार के आपसी झगड़े बिना पुलिसथानों एवं अदालतों की शरण में जाने की बजाय समाज में पंचों के फैसलों के द्वारा समझौता कराया जाये।

उपरोक्त पांच सूत्री कार्यक्रम कैसे सफल हो? इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षा का प्रचार-प्रसार किया जाये। समाज में जो निर्धन बच्चे हैं उनको छात्रवृत्ति प्रदान कर आगे पढ़ने का अवसर प्रदान किया जाये। इसके लिए अपने समाज में सच्चे समाजसेवियों को लेकर एक ट्रस्ट का गठन किया जावे, शिक्षा के केन्द्रों के पास छात्रावासों का निर्माण करवाया जाये।

ये सब करने से ही समाज आगे बढ़ेगा। शिक्षा से ही हम अपने पुरखे (महापुरुष) संत धनाजी का नाम रोशन कर सकेंगे।

***

धनावंशी अध्यापक के कर्त्तव्य

• चेतन स्वामी

विश्व के किसी भी हिस्से में समाज परिवर्तन की क्रांति किसी न किसी अध्यापक के द्वारा ही संभव हुई है। जब किसी समाज की सात्विक परम्पराएं छिन्न-भिन्न होने लगे। समाज सैकड़ों वर्षों की उच्चताओं से नावाकिफ होने लगे। जाति के धार्मिक चिह्न लुप्त होने लगे। तब प्राचीन जातीय अभिमान को बचाए रखने का दायित्व बौद्धिकता से नाता रखनेवाले अध्यापक वर्ग का रह जाता है। इसीलिए सभी समाजों में अध्यापक की विशेष गरिमा और महिमा होती है। एकदम अनपढ - साक्षर-पुस्तकों के निकट न फटकनेवाले लोग जब समाज के लिए अनुपयुक्त बातें करने लगे, तब अध्यापक को अपने ज्ञान की थाती लेकर उठ खड़े होना चाहिए।

धनावंशी सम्प्रदाय जिन चुनौतियों को झेल रहा है-उसमे अध्यापक का दायित्व बढ जाता है कि वह अपने समाज के इतिहास-धार्मिक परम्पराओं से विदित कराए। समाज के एकत्व और उन्नति के लिए बौद्धिक जन को अपना कर्तव्य समझना होगा।

हमारे धनावंशी समाज की धार्मिक परम्पराओं से परिचित कराने का दायित्व कभी महंतों का हुआ करता था पर महंतों पर समाज की पकड़ न रहने से देखते देखते यह परम्परा समाप्त जैसी हो गई और अब जो नामभर के दो चार महंत है भी तो वे धनावंश के इतिहास और स्वयं अपने महंतद्वारे के इतिहास से अपरिचित हो गए हैं। समाज को प्रबोधित करने का माद्दा अब उनमें नहीं रहा।

अध्यापकों में पढने लिखने की प्रवृत्ति सहज होती है। ज्ञान का अर्जन और उसे बांटने का उनका अभ्यास रहता है। अपने- अपने अध्यापन दायित्वों का निर्वहन करते हुए उन्हें समर्पण भाव से थोड़ा समय अपने समाज को भी देना चाहिए। जब समाज ज्ञान-विज्ञान की विषमताओं को भोग रहा हो अध्यापकों को स्वमेव अपने समाज की पूर्व परम्पराओं से लोगों को विज्ञ कराने के लिए आगे आ जाना चाहिए। मेरा अपने समाज के गुरुजन से विनम्र अपील है कि वे धनावंश को ज्ञान सम्पन्न करने का बीड़ा उठाए। बाकी अन्य जन भी आपका साथ देंगे।

**अपनो ने ही बदली है अपनेपन की परिभाषा, फिर भी अपनो से ही होती है अपनेपन की अभिलाषा
प्रेम से बढ़कर इस दुनियां में कुछ भी नहीं है।**

इसके उलट हमें आपस में लड़ने से ही फुरसत नहीं है। कोई तो कोशिश करें कि अपना समाज ऋषियों सा सात्विक प्रवृत्ति वाला समाज एक जाजम पर बैठे। सभी पद के लालच में अलग-अलग बैनर लेकर अपनी अपनी ढपली अपना अपना राग अलाप रहे है। शरीर के साथ-साथ आत्मा व मन की सफाई जरूरी है, समाज का सबसे बड़ा नेता वही है जो समाज की नि:स्वार्थ सेवा करने में हमेशा तत्पर रहता है।

नरोत्तम स्वामी
प्राचार्य

समाज के विकास में युवा शक्ति की अहम भूमिका

किसी भी समाज को गति देने व विकसित होने में जागरुकता अभियान व संगठन की आवश्यकता होती है। जो समाज अपने अन्दर संगठन शक्ति बढ़ाता है, वही इस जगत में विजयी होता रहा है। जिस समाज में आपसी फूट होगी वह समाज पराजित होता रहेगा। अत: आपस में एकता शक्ति बढ़ाकर अपनी उन्नति करना हर एक के लिए अत्यन्त आवश्यक है। हमें सेवा करने के भाव से सदैव जागृत रहना चाहिए।

सबसे पहले हम अपना अनुशासन देखें फिर प्रशासन चलाने की सोचें। ऊँचे पद पर बैठे व्यक्ति में समाज के आखिरी छोर पर बैठे समाज बंधुओं को पहचानने की ललक होनी चाहिए। सहानुभूति होनी चाहिए। हम और आप सभी एक सामाजिक बैनर के तले बैठे हैं। पहले समाज में एकता की जागरुकता फैलाने का अभियान शुरु करें। सामाजिक स्तर के ऊँचे पद पर विराजमान महानुभाव को चाहिए कि तकलीफ के समय निचले तबके के आखिरी छोर के समाज बंधुओं की सुध ले। उनके साथ सहानुभूति प्रकट कर उनका सहयोग करें।

इसके उलट हमें आपस में लड़ने से ही फुरसत नहीं है। कोई तो कोशिश करें कि अपना समाज ऋषियों सा सात्विक प्रवृत्ति वाला समाज एक जाजम पर बैठे। सभी पद के लालच में अलग-अलग बैनर लेकर अपनी अपनी ढपली अपना अपना राग अलाप रहे हैं। शरीर के साथ-साथ आत्मा व मन की सफाई जरूरी है, समाज का सबसे बड़ा नेता वही है जो समाज की नि:स्वार्थ सेवा करने में हमेशा तत्पर रहता है। प्रशस्ततम कर्म करना चाहिए जिससे आपसी एकता को मजबूत करने में हम सफल हो सकें।

अगर हम चाहते है कि समाज के सभी सदस्यों का भविष्य उज्वल हो तो हमें बालकों के व्यक्तित्व विकास की ओर ध्यान देना होगा क्योंकि आज के बच्चे ही कल का भविष्य है। बच्चों को बाल साहित्य से जोड़े। परिवार बालक की प्रथम पाठशाला होती है। अत: माता-पिता व शिक्षक बच्चों में संस्कार सृजन का प्रयास करें, संयमित व धैर्यवान बनने की प्रेरणा दें। आज गांवों से लेकर शहरों तक मोबाईल, टीवी, कम्प्युटर ने बच्चों को अपने जाल में ऐसा जकड़ लिया है कि वे इसी में अपनी खुशियां ढूंढने लगे हैं। उन्हें प्रतिदिन क्रूरता, हिंसा भरे दृश्य देखने को मिलते हैं जिससे बच्चे, संवेदन शून्य, हिंसक, आक्रामक, एकाकी, चिड़चिड़े हो रहे है। बच्चों ने मैदान में खेलना छोड़ दिया, रिश्तों का सम्मान करना उनके मन से समाप्त होता जा रहा हैं। स्नेह व मार्गदर्शन के अभाव में उनके नकारात्मक भाव विकसित हो रहे हैं। यहीं पर . अभिभावकों व

खामोशी बहुत कुछ कहती है, कान लगाकर नहीं, दिल लगाकर सुनिए।

शिक्षकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है। उन बच्चों को उन्हें स्नेह और सम्बल मार्गदर्शन चाहिए। उनमें सोचने, समझने, अच्छे संस्कार पाने के लिए साहित्य को पढ़ने की ललक पैदा हो।

अंततः युवा शक्ति आज समाज का भविष्य है, को आगे लाना होगा। समाज में संगठन बनाना एक आवश्यक कार्य है ताकि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को एक जिम्मेदारी का अहसास हो और वह समाज में अपनी निष्ठा व जिम्मेदारी से समाज की सेवा में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देकर अपने ही समाज का एक अभिन्न अंग बने। शिक्षा, दहेज प्रथा, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक पर हमारी युवा शक्ति को सुविचारों से समाज की सेवा करनी होगी, तभी हमारा समाज प्रगति की राह पर अग्रसर होगा। वर्तमान में चल रही विश्वव्यापी महामारी के विनाश के लिए धनाजी महाराज से प्रार्थना करते हुए सभी समाज बंधुओं को जय ठाकुरजी की।

❊ ❊ ❊

■■■ कहानी

बन्द तिजोरी

■ रघुवर आनन्द स्वामी
अहमदाबाद

राजस्थान के चूरू जिले के एक छोटे से गाँव मे गोपाल दास धनावशी निवास करते हैं- छोटा सा परिवार है-एक बेटा और एक बेटी। बड़ी बेटी है-बेटी की शादी हो जाती है और अपने घर बार की हो जाती है। गोपाल दास जी के पास अपने पूर्वजों की जमीन जायदाद तो नहीं है, मगर परिवार का गुजारा अच्छे से हो जाता है। दो चार गाय भैंस भी रखते हैं। गोपाल दास मेहनतकश किसान है। मगर बारिश न होने पर फसल नहीं होती है, कोई कोई साल। मगर फिर भी खुश रहते हैं-अपने परिवार के साथ। उनके बेटे का नाम हरिदास है मगर उसे गोपालदास-हरिया कह कर ही बुलाते हैं। हरिया अब जवान हो गया है।और दसवीं की परीक्षा भी पास करली है। हरिया एक दिन अपने पिताजी से आग्रह करता है कि क्यों न बापूजी मैं भी दूसरों की तरह प्रदेश कमाने चला जाऊं। हमारे यहाँ के बहुत से लोग गुजरात और महाराष्ट्र नौकरी करने जाते हैं और कुछ तो थोड़े दिन की नौकरी करने के बाद अपना खुद का व्यवसाय कर लेते हैं। गोपाल दास गहरी चिंता में पड़ जाते हैं। सोचते हैं एक ही बेटा है हमारा अभी शादी भी नही हुई है। हम कैसे रहेंगे अकेले? गोपाल दास जी काफी सोचने के बाद हरिया को ना बोल देते हैं। हम यहां खुश हैं। गुरु धनांजी महाराज की दया से सब कुछ है-हमारे पास, मगर हरिया प्रदेश जाने का मन बना बैठा है। लाख मना करने के बाद भी नहीं रुकता- प्रदेश चला जाता है। कुछ दिनों के बाद हरिया की शादी हो जाती है। अपनी पत्नी को भी साथ ले जाता है। अपनी मेहनत और लगन से हरिया अपना खुद का बिजनेस खड़ा कर लेता है। अब हरिया को लोग हरि दास वैष्णव के नाम से जानते हैं। उधर गोपालदास उम्र के आखिरी पड़ाव में है। अखबार पढ़ने के शौकीन हैं गोपाल दास के घर काफी रद्दी इकट्ठा हो जाती है। एक दिन शहर जाना हुआ तो सोचा जा तो रहा हूं क्यों ना इस रद्दी को किसी कबाड़ी की दुकान पर दे देंगे। कबाड़ी की दुकान पर रद्दी बेचते समय उनकी नजर कुछ पुरानी किताबों पर जाती है,पढ़ने का शौक रखते हैं। पुरानी किताब देखने लगते हैं- अपनी रुचि की। तभी एक किताब और कुछ मासिक पत्रिका फ़टी पुरानी मिलती है। अपना चश्मा साफ करके पढ़ते हैं तो आश्चर्यचकित हो जाते हैं। किताब पर धनावंशी संहिता लिखा हुआ है और दूसरी कुछ पत्रिकाओं पर धनावंशी हित लिखा हुआ है। सभी खरीद लेते हैं। मन में विचार करते हुए बाजार की तरफ कदम बढ़ाते हैं-ये करिश्मा कैसे होगया? मुझे आज तक धनावंशी समाज का कोई भी साहित्य नहीं मिला। मन में खुशी भी थी और हैरानी भी। गोपाल दास इन पुस्तकों को बार-बार पढ़ता है और पढ कर एक तिजोरी में जमीन के दस्तावेजों की तरह सम्भाल कर रख देता है। उनकी मौत के बाद गोपाल दास जी का पोता अपने पिता हरि दास वैष्णव के साथ गांव आता है। तो घर के एक कमरे के कोने में पड़ी तिजोरी को खोलकर कर देखता है। दूसरे कुछ दस्तावेज के साथ वे पुस्तकें भी सम्भाल कर रखी हुई हैं। गोपाल दास जी का पोता पुस्तक पर लिखा धनावंशी संहिता वाक्य पढ़कर पूछता है--पापा ये धनावंशी क्या होता है? हरिया कोई उत्तर नहीं दे पाया। ■■

जिस दिन आप अपनी हंसी के मालिक खुद बन जाओगे, तब आपको कोई भी रुला नहीं सकेगा।

आलेख

श्री धनावंश का बौद्धिक उत्कर्ष

डॉ. शैलेन्द्र स्वामी
जोधपुर

दक्षिण भारत में श्री रामानुजाचार्य एवं उत्तर भारत में श्री रामानन्दाचार्य ने वैष्णव धर्म की ज्योति प्रज्वलित की। स्वामी रामान्दजी के बारह शिष्य प्रधान थे, जिनमें श्री धना जाट को भक्त शिरोमणि माना जाता है। श्री धनाजी को अपना गुरु मानने वाले धनावंशी वैष्णव कहलाते है, जो अपने उत्कर्ष के लिए निरन्तर उन्नति पथ पर अग्रसर है।

भारत की द्वितीय काशी के रूप में प्रख्यात जयपुर में संस्कृत विश्वविद्यालय 6 फरवरी 2001 से स्थापित है। भांकरोटा के पास मदाऊ ग्राम में अवस्थित यह विश्वविद्यालय जगदगुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर नाम से सुविख्यात है। इस विश्वविद्यालय में स्वामी रामानन्दजी के बारह शिष्यों के नाम पर बारह द्वारा है, जिनमें धनाद्वार भी उल्लेखनीय है। संस्कृत माध्यम से पढ़ने वाले विद्यार्थी शास्त्री (स्नातक), आचार्य (स्नातकोत्तर), शिक्षा शास्त्री (बी.एड.), शिक्षाचार्य (एम.एढ.), विद्यावारिधि (पी.एच.डी.) की उपाधि प्राप्त करते है। इस विश्वविद्यालय में रामानुज दर्शन व रामानन्द दर्शन तथा योग का अध्ययन-अध्यापन भी होता है। संस्कृत जगत में धनाद्वार के कारण धनाजी की प्रतिष्ठा है। धनावंशी भी इस विश्वविद्यालय एवं इससे सम्बद्ध लगभग साठ संस्कृत महाविद्यालयों में नियमित/स्वयंपाठी विद्यार्थी के रूप में अध्ययन कर अपना बौद्धिक उत्कर्ष प्राप्त कर सकते हैं।

श्री धनाजी की दार्शनिक विचारधारा विशिष्टाद्वैत पर आधारित है। दर्शन (फिलॉस्पी) की भित्ती पर आधारित धर्म ही स्थाई होता है। निर्गुण-निराकर सम्प्रदाय शंकराचार्य के अद्वैत-दर्शन एवं उसी पर आधारित है तो सगुण-साकार सम्प्रदाय रामानुजाचार्य के विशिष्ट अद्वैत दर्शन पर आधारित है। धनावंशी सम्प्रदाय सगुण-साकार उपासना पर बल देता है। अत: रामानुजाचार्य के विशिष्टाद्वैत दर्शन एवं उसी पर आधारित रामानन्द दर्शन का अध्ययन भी धर्म के मूल तत्वों को समझने के लिए करना चाहिए। योग दर्शन एवं योगाभ्यास भी इसमें सहायता कर सकता है।

भक्त धना अपने गुरु रामानन्दाचार्य के प्रति बहुत श्रद्धा रखते थे। उनका कहना था कि गुरु की कृपा से ही परम पद को प्राप्त किया जा सकता है। दास धना हरि के गुण गावैं, गुरु प्रसाद परम पद पावैं। धनावंशी वैष्णवों को भी अपने आराध्य गुरु धनाजी के प्रति असीम श्रद्धा एवं विश्वास रखना चाहिए। धनाजी सभी प्राणियों में एक ही ईश्वर का निवास मानते थे-धना कहे चूक कहूं नाहि, सब घट मांहि एक है सांई। प्रियादास द्वारा लिखित भक्तमाल की टीका का यह कथन उल्लेखनीय है-श्री धन्ना ने लोभ तथा काम को ईश्वर-प्राप्ति में बाधक माना है तथा नाम-स्मरण को ईश्वर-प्राप्ति का प्रमुख साधन बतलाया है। नारद, अम्बरीष, प्रहलाद, सुदामा और उद्धव का उद्धार भी नाम-स्मरण से ही हुआ है और श्री धनाजी भी उसी के गुण गाते हैं।

अत: धनावंश के उत्थान के लिए भक्त धनाजी के विचारों को आत्मसात करना चाहिए। श्रवण, मनन, निदिध्यासन द्वारा अपना आत्म कल्याण करना चाहिए। श्री धनाजी की धार्मिक मान्यताएं अंगीकार कर सम्प्रदाय को उत्कृष्ट बनाना चाहिए। वर्तमान शिक्षा प्रणाली के साथ-साथ धर्म-दर्शन-आध्यात्म की शिक्षा भी दी जानी चाहिए। भौतिक उन्नति के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति भी करनी चाहिए।

श्री धनाजी के जीवन से सम्बन्धित अनेक आलौकिक घटनाएं जुड़ी हुई है, जिनका उल्लेख नाभाजी, प्रियादास और अनन्तदास जैसे दिव्य भक्तों-सन्तों ने अपने साहित्य में किया है। इनसे यह सिद्ध होता है कि श्री धना का प्रभु में दृढ़ विश्वास था तथा स्वयं का जीवन उच्चादर्शों से युक्त था। हमें इनके जीवन से सद्प्रेरणा प्राप्त कर बौद्धिक उत्कर्ष करना चाहिए। चारित्रिक एवं बौद्धिक विकास से श्री धनावंश का उत्कर्ष होगा-इसमें कोई सन्देह नहीं है।

पुरी दुनियां जीत सकते है संस्कार से, जीता हुआ भी हार जाते है अहंकार से।

धनाजी और धनावंश...?

धनावंशी जैसे धार्मिक सम्प्रदाय जो कि विशुद्ध रूप से अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए हैं और कर्म से कृषक होते हुए धर्म से वैष्णव है उन्हें अपने अस्तित्व को पहचानना होगा और अपने खोए हुए गौरवपूर्ण ऐतिहासिक संस्कार को प्राप्त करना होगा

स्वामी राधेश्याम गोदारा
नागौर

समाज के सभी सम्माननीय सज्जनों का सादर अभिवादन। जय ठाकुरजी की। साथियों मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज के बिना उसका अस्तित्व भूमंडल में भटके हुए एक गुमनाम मुसाफिर के समान होता है। इसलिए सृष्टि के आरम्भ से ही मनुष्य जब जंगलों से निकलकर मानव सभ्यता के निर्माण की ओर अग्रसर हुआ तभी उसने समाज निर्माण का पहला पायदान स्थापित किया। समाज वास्तव में व्यक्तियों की भीड़ भरा समूह नहीं, बल्कि समान विचारधाराओं के ऐसे महानुभावों का एक सुव्यस्थित संगठन होता है जो निश्चित आचार-विचार एवं संस्कारों के अधीन रहकर महापुरुषों द्वारा बनाए गए नियमों पर चलने के लिए कृत संकल्पित होता है। संसार में समाज निर्माण की प्रक्रिया एक सतत् प्रक्रिया है और समय के साथ-साथ देशकाल परिस्थितियों के अनुरुप उसमें वांछित परिवर्तन भी लाजमी होता है। किसी महापुरुष द्वारा स्थापित तत्कालीन समाज में उनके द्वारा बनाए गए नियम कायदे पूर्ण रूप से सदियों तक मानव हितकारी हो ऐसा भी आवश्यक नहीं है इसलिए समय-समय पर युग पुरुषों द्वारा उनमें वांछित परिवर्तन करके, उसे समाजोपयोगी बनाये जाते है। ऐसा ही परिवर्तन का एक दौर भारत में भक्तिकाल के दौरान चला।

उस समय विदेशी आक्रांताओं के अत्याचार से सनातन धर्म की रक्षा करने एवं अतिशयोक्ति पूर्ण ब्राह्मणवाद के कर्मकाण्ड को समाप्त करने के लिए कई महापुरुषों ने सनातन धर्म के भंवर जाल में फसे व्यक्तियों को एक नई दिशा और दशा देकर नया समाज नये रुप में स्थापित किया। ऐसे ही एक महापुरुष हुए श्री धना भगत जिन्होंने कृष्ण भक्ति में विलीन होकर धर्म पदच्युत हुए अपने ही समाज के नागरिकों को एक नए जोश और उत्साह के साथ नई धार्मिक दिशा की ओर मोड़ा।

श्री धना भगत के सम्पर्क में आए तत्कालीन किसान वर्ग के लोग जो ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखते और कर्मकाण्ड का मन से विरोध करते, ने श्री धना भगत के बताये पदचिह्नों पर चलकर एक नये समाज का निर्माण किया और वही समाज कालांतर में धनावंशी कहलाया। धनावंशी जैसे धार्मिक सम्प्रदाय जो कि विशुद्ध रूप से अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए हैं और कर्म से कृषक होते हुए धर्म से वैष्णव है उन्हें अपने अस्तित्व को पहचानना होगा और अपने खोए हुए गौरवपूर्ण ऐतिहासिक संस्कार को प्राप्त करना होगा तभी हमारी आने वाली पीढ़ियां एक आदर्श समाज का निर्माण

मुस्कराना तो हमें जिन्दगी ने सिखाया, पर खिलखिलाना तो आप जैसों ने तोहफे में दे दिया।

कर सकेगी।

धनावंशी समाज में धनाजी की प्रतिष्ठा को पुनः प्रतिष्ठित करने में समाज का सुशिक्षित नागरिक शिक्षक इसमें महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकता है क्योंकि शिक्षक सत्य और सत्य की कसौटी पर चलने वाला नागरिक होता है और उसके दिए गए संस्कार समाज में एक नई ऊर्जा प्रदान कर सकते हैं अतः समस्त धनावंशी शिक्षक साथियों से मेरा अनुरोध रहेगा कि आप अपनी गौरवपूर्ण पहचान समाज में स्थापित करने के लिए एवं अपने गुरु की पद प्रतिष्ठा को समाज में पुनः स्थापित करने में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करें। क्योंकि धनावंशी एक धार्मिक पंथ है और इस पंथ की परम्पराओं को कायम रखते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा करके नागरिकों को सत्यता की पहचान स्थापित करने एवं कर्मकाण्ड से दूर करने के लिए उन्हें आस्तिक के साथ–साथ वास्तविक बनाने का प्रयास अगर कोई कर सकता है तो वह शिक्षक ही हो सकता है।

जैसा कि प्रमाणित होता है कि हमारे समाज की स्थापना गुरु परम्परा के अनुरूप हुई है और उसका प्रमाण है कि हमारे यहां महंत प्रथा कायम थी जो गुरु परम्परा का ही रूप है।

समाज को सात्विक नियमों में बांधे रखने में महंत प्रथा एक मील का पत्थर हुआ करती थी लेकिन कालांतर में महंत अपने कर्त्तव्य पथ से विमुख होने के कारण, समाज में वांछित अंकुश समाप्त हो गया जिसके कारण समज में स्वच्छंदता का आचरण प्रकट होने लगा जिसका दूरगामी समाज में विभिन्न नशे एवं कई दुराचारों की प्रवृत्ति के रूप में देखा जा सकता है। इसलिए जब तक कोई योग्य बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्तित्व द्वारा समाज का महंत के रूप में नेतृत्व प्रदान नहीं किया जाता तब तक दिग्भ्रमित समाज का विघटन रोकना असंभव प्रतीत हो रहा है।

धनावंश में संगठन के स्वरुप को मजबूती प्रदान करने के लिए समाज कई महान व्यक्तियों द्वारा सार्थक प्रयास प्रारम्भ से ही किया जा रहा है जिसका परिणाम है कि आज राजस्थान में धनावंश की पहचान के रूप में पांच छात्रावास संचालित हैं जो संगठन का पहला पायदान है। संगठन को और मजबूती प्रदान करने के लिए वर्तमान संचालित संस्थाओं के कार्यकारिणी के सहयोग से प्रत्येक तहसील स्तर पर संगठन बनाकर इसे मजबूती प्रदान की जा सकती। संगठन की मजबूती के लिए विशेष तौर से ऊर्जावान युवा साथियों का सहयोग अपेक्षित रहेगा, साथ ही समाज के समृद्ध व्यक्ति ही संगठन को नई दिशा और ऊर्जा प्रदान कर सकते है।

धनावंश पंथ वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान कायम करने में कामयाब हो रहा है फिर भी इसको और अधिक मजबूती प्रदान करने के लिए एवं कमजोर से कमजोर तबके के प्रतिभावान विद्यार्थी को आत्मसम्बल प्रदान करने एवं यथोचित सहयोग प्रदान करने के लिए प्रत्येक तहसील स्तर पर गठित समिति के निर्देशन में एक मार्गदर्शन मंडल स्थापित किया जावे एवं एक आपातकालीन कोष का निर्माण किया जाये जिसमें समाज के बंधुओं से यथाशक्ति सहयोग प्राप्त करके योग्य विद्यार्थियों की हर क्षेत्र में मदद की जाये ताकि वह भविष्य में समाज का एक आधार स्तम्भ बन सके।

वर्तमान परिस्थितियों में बालिका शिक्षा के लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता है क्योंकि जब तक बालिका शिक्षा को बालकों के समान अवसर उपलब्ध नहीं होगा तब तक संतुलित सामाजिक विकास की कल्पना करना बेमानी होगा।

अंत में आप सभी समाज के नागरिकों से यह करबद्ध निवेदन करना चाहूंगा कि आप अपने आपको समाज का एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति मानते हुए अपने जीवन के अंश का थोड़ा सा समय, थोड़ा सा सहयोग, समाज हित में देकर एक आदर्श समाज की स्थापना में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करें ताकि आदर्श समाज की हमारी संकल्पना साकार हो सके।

सम्बन्धों का जब भी पौधा लगाओ, जमीन को भी परख लेना,
क्योंकि सभी मिट्टी में रिश्तों को उपजाऊ बनाने की आदन नहीं होती।

मांगीलाल स्वामी
सींथल

●●●●

हमारे पंथ में महंत परम्परा है जिनकी दशा दयनीय है। पढ़े लिखे विद्वान धार्मिक प्रवृत्ति वाले महन्त होने चाहिए। जो हमारे समाज को सही दिशा दे सके और लोग उनका अनुसरण कर सके। इसके लिए महन्तों को प्रोत्साहित किया जाकर मान-सम्मान के साथ उनके समक्ष आने वाली कठिनाइयों का समाधान करना भी आवश्यक है। राजनीति से परे हटकर धार्मिक भावना के साथ महन्त अग्रणीय होकर निर्देश प्रदान करे।

आलेख

समाज को आगे बढ़ाने के लिए करने होंगे अथक प्रयास

धनावंश समाज में घर घर धनाजी महाराज को प्रतिष्ठा दिलवाना थोड़ा कठिन है। इस विचित्र समाज के मस्तिष्क में इसका प्रतिबिम्ब स्थापित करने के लिए सर्वप्रथम धनावंशी इतिहास प्रमाणिक तथ्यों को संकलित कर लिखा जाना आवश्यक है तथा उसे प्रत्येक धनावंशी के घर पहुंचाना होगा ताकि उनके मन के विकार दूर होकर प्रकाशमय हो सके। जिससे उनको समझ में आ जाये कि हमारा पंथ आदिकाल से प्रारम्भ न होकर 15वीं शताब्दी में नादवंश से शुरु हुआ है और यह भी समझ में आ जाये कि धनावंश में धना शब्द क्यों जुड़ा हुआ है। बिना नियन्त्रण खोये प्रेम व मधुर स्वर से समझाना भी होगा। अधिक से अधिक सम्पर्क भी करना होगा। रामानन्दाचार्य भक्त धना से आज तक कड़ी से कड़ी जुड़कर सामने आने पर महाराज की प्रतिष्ठा हो जायेगी।

हमारा यह धार्मिक पंथ है इसकी परम्पराएं अत्यधिक विशाल एवं अनुकरणीय है। प्रत्येक धनावंशी को गुरुनिष्ठा, शुद्धाचरण, शुद्ध व भक्तिमय घर का वातावरण होना आवश्यक है। भगवन स्मरण ईश्वर स्तुति वेदना करना हमारे पंथ की परम्परा रही है। कुरुतियों से परे रहकर सामान्य जीवन जीना जीकर अपने बच्चों में ऐसी प्रवृत्तियां जागृत करना आवश्यक है। क्योंकि ये हमारे ही प्रतिबिम्ब है। गुरुद्वारों में समय समय पर पहुंचना तथा धार्मिक आयोजन कर उन्हें निमन्त्रित करना भी हमारी परम्परा रही है।

हमारे पंथ में महंत परम्परा है जिनकी दशा दयनीय है। पढ़े लिखे विद्वान, धार्मिक प्रवृत्ति वाले महन्त होने चाहिए। जो हमारे को सही दिशा दे सके और उनका अनुसरण कर सके। इसके लिए महन्तों को प्रोत्साहित किया जाकर मान-सम्मान के साथ उनके समक्ष आने वाली कठिनाइयों का समाधान करना भी आवश्यक है। राजनीति से परे हटकर धार्मिक भावना के साथ महन्त अग्रणीय होकर निर्देश प्रदान करे।

मुखौटे ही अच्छे है इस दौर में, चेहरा दिखाओं तो लोग बुरा मानते है।

इस कार्य के लिए शिक्षक की भूमिका अधिक कारगर हो सकती है। क्योंकि शिक्षक एक ऐसी कड़ी है जो समाज को सही दिशा में ले जा सकता है। बिखरी हुई मणियों को एक धागे में पिरो सकता है। अध्यापक अगर गुरु बन जाये तो समाज के चार चान्द लग जाये। भावी पीढ़ी के लिए शिक्षक ही सही दिशा–निर्देश दे सकते है।

समाज को गतिशील बनाने के लिए निम्न बातों का होना आवश्यक है–

1. अधिक से अधिक सम्पर्क किया जाए। 2. सम्मेलनों का आयोजन किया जाये। 3. आपदा में सहयोग किया जाए। 4. सामाजिक कार्यों में भाग लेने हेतु प्रेरित करना।

हमारे समाज में सबसे बड़ी समस्या संगठित होने की है। बिखराव गतिशीलता को कम कर देता है। एक दूसरे को पछाड़ने में लगे रहते है। यह भावना संगठित होने में एक बाधा है। इसके लिए एक केन्द्रीय संस्था का निर्माण होना आवश्यक है। जिससे एक वर्ष में सभी एक जगह पर एकत्र होकर विचार विमर्श कर सके, इसके अलावा सम्भागीय, जिला, तहसील स्तरीय संस्था हो जिसमें विभिन्न गतिविधियों पर चर्चाएं हो सके तथा उनका समाधान हो सके। इसमें व्यक्तिगत समय, धन, निस्वार्थ सेवा, बिना मान सम्मान की इच्छा रखकर कार्य करना जरूरी है। सभी धनावंशी भाइयों को समान दृष्टि से देखा जाये।

शिक्षा के स्वरुप को बदलने के लिए बच्चों के बौद्धिक स्तर को मापा जाना आवश्यक है। शिक्षा का अर्थ है उनके मानसिक, बौद्धिक, शारीरिक व धार्मिक विचारों का विकास करना। प्राथमिक स्तर तक उन्हें व्यावहारिक ज्ञान आवश्यक है ताकि वह उन्नति के मार्ग का चयन कर सके। छात्रों को प्रोत्साहित करना, निर्बल को सबल बनाना, सहयोग करके उनका मनोबल बढ़ाया जा सकता है। गुरुकुल प्रणाली को अपनाया जाना भी आवश्यक है उससे स्वरूप में बदलाव आ सकता है। इसके लिए अलग अलग क्षेत्रों में समितिया (शिक्षा) बना दी जाये जो हर सम्भव प्रयास करके अवरूद्ध अध्ययन को सुचारु रख सके। जिलेवार छात्रावास की व्यवस्था भी आवश्यक है। गुरुकुल छात्रावास प्रणाली अधिक कारगर हो सकती है। छात्रों में प्रतिस्पर्द्धा के लिए समय समय पर गतिविधियां रखकर उन्हें प्रोत्साहित किया जाये।

कविता

भक्त धनाजी महाराज

—सीतारामदास परिव्राजक

बालकपना में एक विप्र संत घर आये ठाकुर पूजा देख शुद्ध हीयो ललचायो है।
सालिग्राम शीला मांगी बाल हठ कीन्हो कछु बालक जान द्विज पाहन दूसरो झलायो है
जानके अजान कछु बिधि बतलाय दीन्हो प्रभु को प्रसाद काम खास बतलायो है।
धार बिसवास भक्त पूजा पाठ पूरा किया प्रभु को प्रसाद निज हाथ से जिमायो है।।

ठाकुरजी की आज्ञा मान काशी को प्रस्थान कीन्हो हर्ष ततकाल गुरू रामानन्द धारयो है।
मंत्र के प्रभाव सनातन को प्रचार कीन्हो अत्याचार मत इसलाम को बिडारयो है।।
द्वार द्वार घूम घूम घूमके पंजाब तक राजस्थान कर्म क्षेत्र आपको विचारयो है।
बहुत से ही पंथ भक्ति काल में प्रकट भये धनावंस बैरागी ठाडो धनाजी विस्तारयो है।।

सरल स्वभाव विसवास को प्रतीक जैसे रोजी रुजगार कृषि गाय ही चरावतो।
सांझ औ सवेरे नित ठाकुर की पूजा करे प्रेम नृत्य धार गुण गोविन्द के गावतो।।
प्रभु के भरोसे हानि लाभ कछु देखे नाहिं पाहन को बीज करि एक बतलांवतो।
ऐसो धनो भक्त घर जाट के जनम पाय धरा पे ना होंतो धन्नावंश को चलावतो।।

अगर कोई तुमसे कुछ मांगे तो दे दिया करो, क्योंकि शुक्र करो ऊपर वाले ने तुम्हे देने वालों में रखा है, मांगने वालों में नहीं।

आलेख

• दिनेशचंद्र स्वामी

धार्मिक मान्यताओं का करें पालन

सर्वप्रथम धनावंशी समाज का प्रमाणिक इतिहास लेखन किया जाए इसके लिए आप जैसे विद्वान व्यक्ति लिख सकते हैं। इसमें अपना कीमती समय निकालकर जितना जल्दी हो सके। उतना जल्दी करे। क्योंकि समय किसी का इन्तजार नहीं करता।

भारत का मध्यकालीन इतिहास का धार्मिक आन्दोलन प्रसिद्ध है। इस आन्दोलन के द्वारा हमारे देश में धार्मिक पुनर्जागरण हुआ। इसी दौरान हमारे धनावंश पंथ का उदय हुआ। परिस्थिति के अनुसार समय के साथ पंथ आगे बढ़ता रहा। धार्मिक परम्पराओं के अनुसार ही समाज का कानून बनता रहा तथा समाज के रीति-रिवाज भी उसी अनुसार बढ़ते रहे।

आजादी के पश्चात प्रत्येक पंथ, शिक्षा, जाति, धर्म में परिवर्तन आने लगे। देश में कानून का शासन लागू हो गया तथा का प्रसार होने लगा। प्रत्येक व्यक्ति अब दुनिया के साथ खड़ा रहने की सोचने लगा। इससे फायदा तो यह हुआ कि समाज समय के साथ शिक्षा के द्वारा प्रगति करने लगा। लेकिन नुकसान यह हुआ कि वह अपने समाज की धार्मिक व सामाजिक परम्पराओं को तोड़ने लगा वह आधुनिकता के सांचे में ढलने लगा।

धनाजी महाराज की प्रतिष्ठा के लिए सर्वप्रथम धनावंशी समाज का प्रमाणिक इतिहास लेखन किया जाए इसके लिए आप जैसे विद्वान व्यक्ति लिख सकते हैं। इसमें अपना कीमती समय निकालकर जितना जल्दी हो सके उतना जल्दी करे। क्योंकि समय किसी का इन्तजार नहीं करता। खुशवंतसिंह पत्रकार व लेखक हुए हैं। वो अपने सिक्ख धर्म में ज्यादा आस्तिक नहीं थे। इसके बावजूद उन्होंने सिक्खों का इतिहास लिखकर सिक्खों को अमूल्य धरोहर दे दी। आज के जमाने में सिक्खों का प्रमाणिक इतिहास खुशवंतसिंह का माना जाता और पढ़ा जाता है।

धनावंश एक धार्मिक पंथ है। स्वामी वर्ग में इसलिए उसकी वर्तमान समाज में जो स्थिति चल रही है इनको ही माना जाए। क्योंकि आधुनिक समय में कठोरता से धार्मिक मान्यताओं का पालन नहीं करवाया जा सकता। हरियाणा, पंजाब, दिल्ली

प्रेम तो प्रकृति है, ये कोई व्यवहार थोड़े ही है कि तुम करो तो मैं करूँ।

इत्यादि क्षेत्रों में स्वामी वैरागी समाज ही माना जा रहा है। यहाँ पर रिश्ते भी एक दूसरे की जाति व पंथ में करते आ रहे है। अत: ज्यादा कठोरता समाज को नुकसान पहुंचा सकती है। शादी के लिए लिंगानुपात बहुत ज्यादा प्रभाव डालता है।

धनावंश में नव महंतो को सर्वप्रथम अपने अस्तित्व को बचाने के लिए खुद को संघर्ष करना पड़ेगा। आधुनिक समाज के अनुरूप ढलना होगा, स्वयं को शिक्षित व विद्वान होना होगा। महंतद्वारों को आध्यात्मिक केन्द्र बनाना पड़ेगा जिससे उनकी पहचान बन सके।

धनावंश के उत्थान में अध्यापक अपने समाज को उसकी जड़ की जानकारी देकर तथा समाज में शिक्षा का प्रचार–प्रसार व तकनीकी ज्ञान बढ़ाकर अपनी भूमिका सिद्ध कर सकते हैं। समाज के बच्चों को दिशा व निर्देश देकर उनको आगे बढ़ने में सहायक हो सकते हैं।

धनावंश समाज को गति देने के लिए सामाजिक कुरीतियों को दूर कर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। राजनैतिक पदों पर आगे आने का प्रयास करना चाहिए। व्यापार व उच्च सरकारी पदों पर नियुक्त होने व उसका लाभ नीचे तक दिलवाने का प्रयास करना चाहिए।

धनावंश में सांगठनिक रूप से राष्ट्रीय स्तर व राज्य स्तर पर कमेटी का गठन कर इसके पश्चात जिला व खंड स्तर पर कमेटी बनावाई जावे जो धनावंश में शिक्षा के स्वरूप के लिए धार्मिक शिक्षा के साथ–साथ आधुनिक व तकनीकी शिक्षा पर जोर देना आवश्यक है। जिससे समाज रोजगार के साथ–साथ आगे बढ़ने की पहचान बन सके।

प्रसंगवश

सच्ची बात

● चेतन स्वामी

मेरे पिताजी खेती करते थे। केवल अक्षर ज्ञान रखते थे-पर लौकिक-पौराणिक और ऐतिहासिक बातों की बहुत जानकारी थी। उनकी इस रुचि के कारण ही मैं लेखन की ओर बाल्यकाल से ही प्रवृत्त हुआ। स्कूल में आठवीं कक्षा में पढते समय से ही मेरी रचनाएं छपने लगी थी। लगभग पन्द्रह वर्ष की अवस्था में मैंने उनसे एक प्रश्न किया कि हमारे घर के पिछवाड़े में जो स्वामियों का मंदिर है-क्या ये हमारी ही जाति के स्वामी है? उन्होंने कहा ये रामावत हैं और हम धनावंशी हैं। मैंने पूछा हमें धनावंशी क्यों कहते हैं? तो उन्होंने कहा कि हम धनाजी महाराज के शिष्य हैं। उनके पंथ से हैं-- इसलिए हम धनावंशी कहलाते हैं। फिर उन्होंने अनेक बार धना भगत की कथा सुनाई और मैंने चाव से सुनी।

मेरे सत्संग गुरुजी श्री किशनरामजी सुथार अक्सर व्यंग्य करते हुए कहते--भगत धना के वंश से हो उनके जैसा त्याग वैराग सीखो तब भक्ति का मार्ग समझ में आएगा।

एक सज्जन ने मुझे लिखा कि हमें तो हमारे पूर्वजों ने कभी धनाजी के बारे में बताया ही नहीं। तो इसका उत्तर यह है कि क्या आपने कभी अपने कुल की बातें पूछीं? नहीं पूछी या आपके पूर्वज रुचिशील नहीं रहे या उनको इसकी जानकारी नहीं रही तब --इसमें दोष किसका रहा? आप जो बातें नहीं जानते या जानने का प्रयास नहीं करते तो क्या उन बातों का कोई महत्व नहीं रह जाता?

आज आप भी अज्ञानी बने रहे तो आपके बच्चे भी आपसे कुछ नहीं जान पाएंगे तब क्या इसका दोष धनाजी को जाएगा?

न जानना कोई दोष नहीं है पर जानने के लिए तैयार न होना बड़ा भारी दोष है। ऐसे व्यक्ति पीढी दर पीढी अंधेरे को ढोते रहते हैं। यह कोई बुरा मानने की बात नहीं है।

आजाद रहिये विचारों से लेकिन बंधे रहिए अपने संस्कारों से,
प्रेम सबसे कर, विश्वास थोड़ा कर, नुकसान किसी का मत कर।

व्यक्तित्व विशेष

मानवता की मिसाल श्री देवाराम स्वामी

• स्वामी राधेश्याम गोदारा
नागौर

कुछ चुनिंदा साथियों के साथ एक बैठक 3 मार्च 1993 को समाज का भवन जो मंगलपुरा लाडनूं में बनाया गया था जिसकी जमीन का क्रय समाज के आर्थिक सहयोग से चंदा एकत्रित करके किया गया था एवं उस संस्थान को श्री धनावंशी स्वामी समाज शिक्षण संस्थान मंगलपुरा लाडनूं के नाम से जाना जाता है, मैं आयोजित की गई और एक प्रस्ताव पारित किया गया की नागौर जिले के लिए धना वंशी स्वामी समाज समिति का गठन कर उसका रजिस्ट्रेशन करवाया जावे। समिति में सर्वसम्मति से प्रस्ताव लेकर श्री देवाराम स्वामी को अध्यक्ष बनाया गया एवं इस संपूर्ण कार्य का दायित्व भी इन्हीं को सौंपा गया।

संसार रूपी सागर में प्रकृति के नियमों के अनुरूप असंख्य जीवों का आगमन धरा पर होता है और आगमन के पश्चात प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए विशेष गुणों के अनुरूप वह अपने दायित्व का निर्वहन करके इस संसार से पुनर्विदा हो जाते हैं। लेकिन संसार में उत्पन्न होने वाले जीवो में एक मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, जो सभी सजीव गतिविधियों के साथ-साथ विवेक व असीम बुद्धि का प्रकाश लेकर इस संसार में ईश्वर की मेहरबानी से आते हैं। सर्व मंगलकारी परमात्मा द्वारा संसार के सभी मनुष्यों को समान रूप से सामर्थ्य और शक्ति प्रदान करके भेजते हैं, लेकिन उनमें से बहुत कम व्यक्ति होते हैं जो अपनी शक्ति और सामर्थ्य का उपयोग जनकल्याण और मानवता के नए आयाम स्थापित करने में कर पाते हैं। ऐसे ही एक व्यक्तित्व का मैं आपसे परिचय करवाना चाह रहा हूं जिन्होंने अपने सांसारिक दायित्वों का निर्वहन के साथ साथ बेहतरीन तरीके से निस्वार्थ सामाजिक दायित्व का निर्वहन करके मानवता की एक मिसाल कायम की है।

ऐसे महान व्यक्तित्व का नाम है श्री देवाराम स्वामी जिनका जन्म श्री विजय राम जी स्वामी गोत्र भाम्भू निवासी बाकलिया तहसील लाडनूं जिला नागौर मे दिनांक 7 जुलाई 1937 को हुआ। श्री देवाराम जी के पिता विजय राम जी एक सामान्य कृषक होते हुए भी अपनी दूरदृष्टि सोच के कारण इन्होंने अपनी संतान को शिक्षा दिलाने के लिए शिक्षण संस्थान में प्रवेश दिलाया, इनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव बाकलिया में हुई एवं तत्पश्चात हाई स्कूल की परीक्षा 1954 में श्री जगन्नाथ तापड़िया हाई स्कूल लाडनू से उत्तीर्ण की। हाई स्कूल की परीक्षा पास करने के पश्चात पारिवारिक परिस्थितियों के मध्य नजर इन्होंने रोजगार के लिए पशुपालन महाविद्यालय बीकानेर से 6 महीने का वेटरनरी कंपाउंडर पाठ्यक्रम पास किया।

21 फरवरी 1956 से 15 जुलाई 1961 तक

**हजार काम कर दो किसी को मालूम नहीं चलेगा,
पर एक बार मना कर के देख लो, पूरी दुनियां को पता चल जायेगा।**

पशुपालन विभाग में कंपाउंडर के रूप में सेवाएं दी। तत्पश्चात 16 जुलाई 1961 से 31 जुलाई 1995 तक लेखा विभाग के विभिन्न पदों पर सेवाएँ देने के पश्चात् 31 जुलाई 1995 को लेखा अधिकारी पद से सेवानिवृत हुए। फरवरी 1992 मे आपकी पदोन्नति लेखा अधिकारी के पद पर होने के फलस्वरूप आपने नागौर ट्रेजरी में जिला कोषाधिकारी के रूप में महत्वपूर्ण पदभार ग्रहण किया एवं जिला स्तरीय अधिकारी के रूप में अपनी अमिट छाप स्थापित करते हुए अपनी विशेष पहचान पूरे जिले में बनाई। आप में सामाजिक दायित्व एवं समाज सेवा की ललक प्रारंभ से ही रही थी। आपने सामाजिक संगठन बनाकर सामाजिक जागरूकता उत्पन्न करने एवं सर्वप्रथम राजस्थान में धनावंशी स्वामी समाज की एक अलग पहचान कायम करने के लिए अपने कुछ सक्रिय सहयोगियों के साथ 1975 में नागौर में एक बैठक आयोजित कर समिति का गठन किया, जिसमें महंत प्रेमदास जी जायल को अध्यक्ष , श्री रतन दास जी स्वामी निंबी को मंत्री तथा स्वयं देवाराम जी स्वामी कोषाध्यक्ष बने। उसके पश्चात इस समिति के अनुकरण में जोधपुर प्रवासी समाज के बंधुओं द्वारा इसी समिति के द्वारा बनाए गए संविधान एवं कर्तव्यों के अनुसार राजस्थान स्तर की समिति का गठन किया एवं उसका जयपुर में रजिस्ट्रेशन करवाया गया। लेकिन श्री देवाराम जी के मन में हमेशा यह भावना बनी रही कि किस प्रकार सामाजिक संगठन को मजबूती प्रदान की जाए। सामाजिक संगठन की एकता और मजबूती प्रदान करने के लिए जब भी कोई सामाजिक परिवारिक समारोह होता देवाराम जी द्वारा समारोह मैं मौजूद समाज के मौजिज लोगों के सामने अपने मंतव्य को प्रकट करते और समाज के होनहार युवाओं और विद्यार्थियों के लिए कोई शैक्षणिक संस्था निर्माण का प्रस्ताव रखते। सामाजिक माहौल बनाने का यह कार्य काफी लंबे समय तक चला और इस दौरान उन्हें कोई बड़ा सहयोग कहीं से प्राप्त नहीं हुआ फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी और अपने मंतव्य के अनुरूप लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपने कदमों को हमेशा आगे बढ़ाते रहे। और जैसा कि हम जानते हैं प्रकृति में कुछ शुभ कार्य कार्य करने के लिए ईश्वर ने कोई नियत समय पहले से ही तय कर रखा होता है, और ऐसा ही हमारी सामाजिक संस्था के गठन और स्थापना का नियत समय शायद ईश्वर ने पहले से ही तय कर रखा था। इसी शुभ कार्य के लिए ईश्वर ने इनके मन और मस्तिष्क में एक नई ऊर्जा और शक्ति प्रदान की और उन्होंने इस कार्य को अंजाम तक पहुंचाने के लक्ष्य के अनुरूप अपने कुछ चुनिंदा साथियों के साथ एक बैठक 3 मार्च 1993 को समाज का भवन जो मंगलपुरा लाडनूं में बनाया गया था जिसकी जमीन का क्रय समाज के आर्थिक सहयोग से चंदा एकत्रित करके किया गया था एवं उस संस्थान को श्री धनावंशी स्वामी समाज शिक्षण संस्थान मंगलपुरा लाडनूं के नाम से जाना जाता है, मैं आयोजित की गई और एक प्रस्ताव पारित किया गया की नागौर जिले के लिए धनावंशी स्वामी समाज समिति का गठन कर उसका रजिस्ट्रेशन करवाया जावे। समिति में सर्वसम्मति से प्रस्ताव लेकर श्री देवाराम स्वामी को अध्यक्ष बनाया गया एवं इस संपूर्ण कार्य का दायित्व भी इन्हीं को सौंपा गया। आपने अपने दायित्व के अनुरूप 26 मार्च 1993 को नागौर में श्री धनावंशी स्वामी समाज समिति का रजिस्ट्रेशन करवाया। इस समिति में आप अध्यक्ष मनोनीत किए गए तथा आपके सहयोगी श्री रतन दास स्वामी को मंत्री एवं श्री रामनिवास स्वामी रायधनू को कोषाध्यक्ष तथा नरेन्द्र कुमार स्वामी जाखेड़ा को अध्यक्ष शिक्षा समिति, श्री मनोहर दास खिवंताना उपाध्यक्ष, तुलछीदास खिंयाला, ईश्वर दास दुजार व देवमित्र जी दुजार सक्रिय सदस्य बनाये गए। समिति का रजिस्ट्रेशन होते ही आपके मन में एक गहरी ललक जगी और समाज के लिए कुछ कर गुजरने का एक नया जज्बा और जोश उत्पन्न हुआ। आप इस संबंध में निरंतर प्रयास कर रहे थे और इसी समय आपका पदस्थापन नागौर कोष कार्यालय में जिला कोषाधिकारी के रूप में हुआ। जिला कोषाधिकारी के रूप में आप एक बेहतरीन छवि के साथ एवं पूर्ण निष्ठा, लगन और ईमानदारी के साथ राजकीय सेवा का कार्य कर रहे थे।

सच्चे लोगों पर उतना ही विश्वास रखिये, जितना दवाइयों पर रखते हैं,
बेशक थोड़े कड़वे होंगे, पर आपके लिए फायदेमंद ही होंगे।

आपकी निष्ठा आपकी ईमानदारी आपके कर्तव्य परायणता के कारण आपकी छवि नागौर जिला प्रशासन में एक उज्जवल दीपक के समान प्रकाशित थी । इसी समय नागौर जिले के जिला कलेक्टर श्रीमान ललित कुमार मेहरा थे। आपकी छवि जिला कलेक्टर के सामने एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी और कर्मनिष्ठ ईमानदार व्यक्ति की थी। राजकीय कार्य से प्रति दिवस आपका मिलन जिला कलेक्टर से होता रहता था, आप की छवि से प्रभावित होकर जिला कलेक्टर नागौर ने स्वयं आपके सामने प्रस्ताव रखा कि स्वामी जी आपका कोई कार्य हो तो बताना। जैसा कि इनके व्यक्तित्व में प्रदर्शित होता है इन्होंने अपने किसी निजी कार्य को कोई महत्व नहीं दिया और और जिला कलेक्टर को स्पष्ट निवेदन किया कि मुझे मेरे समाज के छात्रावास के लिए निशुल्क भूमि की आवश्यकता है अगर आप आवंटित कर सकते हैं तो आपकी मेहरबानी होगी। आपके इस सविनय निवेदन एवं आपके व्यवहार के आधार पर जिला कलेक्टर ने तुरंत हां भर दी और आपसे कहा कि आप प्रस्ताव लेकर आएं, मैं यह कार्य आपका अवश्य करूंगा। देवाराम जी ने मन की लालसा पूरी होने की उम्मीद में यह प्रस्ताव अपने सहयोगी तत्कालीन नागौर पटवारी रामनिवास स्वामी के सामने रखा और कहा कि आप जमीन चिन्हित कीजिए, श्री रामनिवास स्वामी ने जमीन चिन्हित करके उनका प्रस्ताव बनाकर देवाराम जी के सामने प्रस्तुत किया, श्री देवाराम जी ने वह प्रस्ताव जिला कलेक्टर महोदय के सामने प्रस्तुत किया और तत्कालीन अतिरिक्त जिला कलेक्टर श्री बलवंत सिंह मेहता ने तुरंत फाइल पर यह लिखकर की अध्यक्ष की प्रतिष्ठा को देखते हुए निशुल्क जमीन दिया जाना प्रस्तावित है और समाज के भवन के लिए पशु मेला मैदान जोधपुर रोड नागौर पर 15 बिस्वा जमीन का निशुल्क आवंटन कर दिया। 5 बिस्वा जमीन बाद में खेल मैदान के नाम से फिर आवंटित करवाई। जमीन आवंटन के साथ ही श्री देवाराम जी ने अपने कुछ सहयोगियों के साथ उस जमीन पर अपने निजी कोष से छोटी सी बाउंड्री वॉल का निर्माण करवाकर कब्जा प्राप्त किया एवं भवन निर्माण की ऐतिहासिक नींव रखी गई। तत्पश्चात आवंटित जमीन पर समाज का भव्य भवन खड़ा करने के लिए समाज के सभी भामाशाहों से सहयोग प्राप्त करने के लिए प्रथम बैठक का आयोजन 25 सितंबर 1994 को आवंटित भूमि पर करने का निर्णय लिया गया और बैठक आयोजन की सूचना समाज के नागरिकों को प्रेषित की गई। और जैसा होता है प्रकृति को कुछ और ही मंजूर था इस शुभ घड़ी में जिस उत्साह और उमंग के साथ देवाराम जी ने इस बैठक का आयोजन करने का निर्णय लिया था उसी दिन प्रकृति की क्रूरता इनके साथ बहुत बड़ा अन्याय किया और इनका प्रशिक्षु डॉक्टर पुत्र जो कि बीकानेर से ट्रेनिंग ले रहा था का अचानक मलेरिया की वजह से स्वर्गवास हो गया। यह उनके जीवन का बहुत बड़ा आघात और असह्य पीड़ा और कष्ट का समय था फिर भी हिम्मत के धनी इस महान विभूति ने दृढ़ निश्चय के साथ इस पीड़ा और इस असहनीय कष्ट को भी सहन करके सामाजिक दायित्व निर्वहन को कमजोर नहीं पड़ने दिया। आपने समाज के प्रबुद्ध नागरिकों के साथ अपनी अगुवाई में गांव-गांव तक अपने निजी खर्च से पहुंच कर उनसे सहयोग प्राप्त किया और समाज का राजस्थान में प्रथम भव्य छात्रावास एवं भवन की स्थापना की। यही नहीं भवन निर्माण के पश्चात भी आपका लगाव इस संस्था के प्रति दिन प्रतिदिन बढ़ता गया और सेवानिवृत्ति के पश्चात अपने स्वास्थ्य की परवाह किए बिना भी लगातार आज तक इस संस्था का अध्यक्ष पद सुशोभित करते हुए प्रबंधन में अपना अमूल्य योगदान प्रदान कर रहे हैं। और जब भी कोई सामाजिक समारोह होता है और आपको अवसर मिलता है तो आप इस संस्था के हित में बिना किसी संकोच के सहयोग देने एवं समाज से सहयोग प्राप्त करने के लिए हमेशा लालायित रहते हैं। इन्हीं के अनुकरण से समाज के लिए जोधपुर, बीकानेर, जयपुर में भवन निर्माण की सकारात्मक प्रतिस्पर्धा जगी और वहां पर भी भवन बनकर समाज की एक अलग पहचान कायम की। मेरे पास वह शब्द और वो लेखनी नहीं है जो मैं ऐसी महान विभूति के जीवन चरित्र का वर्णन कर सकूं लेकिन यह मेरा सौभाग्य है कि मैं पिछले 20 वर्षों से आपके सानिध्य में इस सामाजिक संस्था और समाज के प्रथम तीर्थ स्थल की सेवा में आपका अनुचर बनकर सहयोगी बनने पर गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। पुनश्च महान विभूति के चरणों में सादर अभिनंदन ।

संसार में झूठा दिखावा भी दुख का सबसे बड़ा कारण होता है।

आलेख

पुखराज स्वामी
अध्यापक

समाज में कई प्रतिभाएँ है जो उचित मार्गदर्शन के अभाव में पिछड़ जाती हैं और एक साधारण जीवन जीने को मजबूर हो जाती हैं। अध्यापक वर्ग अपने आस पास समाज की ऐसी प्रतिभाओं को खोजकर उनका उचित मार्गदर्शन करें

धनावंश के उत्थान में अध्यापक की भूमिका

- अध्यापक समाज के साथ-साथ राष्ट्र को विकसित करने में भी अहम भूमिका निभाता है।
- समाज के शिक्षक अगर जिम्मेदारी लेकर प्रयास करें तो दशा-दिशा बदलते देर ना लगेगी।
- माता-पिता भी शिक्षक ही होते है, अपने बच्चों में संस्कार की शिक्षा भरें जिससे समाज शिक्षित और संस्कारी बनेगा।
- युवा वर्ग शिक्षकों का सम्मान करना सीखें और प्रेरणा लेकर आगे बढ़ें।

प्राचीन समय से एक कहावत प्रचलित है कि यदि आप एक साल की सोचते हो तो फसल उगायें, सौ साल की सोचते हो तो वृक्ष लगाओ और यदि सदियों की सोचते हो तो शिक्षक बन जाओ। इसी बात को ध्यान में रखते हुए धनावंशी अध्यापक वर्ग को समाज के उत्थान में अपने कर्तव्य को समझना होगा। भौतिक और आर्थिक सम्पदा तो क्षणभंगुर होती है, किन्तु बौद्धिक संपदा पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है। यदि अध्यापक वर्ग समाज के प्रति अपने कर्तव्य के पथ पर निकल पड़े तो समाज का कायाकल्प होते देर नहीं लगती। एक शिक्षक में वह शक्ति होती है जो कर्तव्य से विमुख घनानंद को हटाकर चंद्रगुप्त को पदस्थापित कर सकता है ।

धनावंश के उत्थान के लिए सबसे पहले हमें हमारे पंथ प्रवर्तक भक्त शिरोमणि श्री धनाजी महाराज को वह प्रतिष्ठा दिलानी है जिसके वो हकदार हैं। इसके लिए हमें धनावंश के प्रति समर्पित एक टीम तैयार करनी होगी। एक गुरूकुल शिक्षा पद्धति पर आधारित धनावंश का शिक्षण संस्थान बनाया जाए, जिसमें प्रतिभाशाली धनावंशी विद्यार्थियों को

जिस कार्य से किसी का दिल दुखे वो पाप और किसी के चेहरे पर हंसी आवे वो पुण्य।

प्रवेश दिया जाए। उन विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा भी दी जाए। इनको धनाजी महाराज के जीवन से जुड़ी घटनाएं बतायी जाएं। उनको धनावंश के संस्कार दिए जाए। फिर इनकी शिक्षा पूर्ण होने के बाद जब ये समाज में जायेंगे तो धनाजी महाराज की शिक्षा का प्रचार करेंगे। जितने भी धनावंशी छात्रावास हैं उन सभी मे धनाजी महाराज की मूर्ति लगायी जानी चाहिए और धनाजी के जीवन से जुड़ी हुई घटनाएं सभी छात्रों को बतायें। धुआंकला में धनाजी की जयंती पर धनावंशियों का मेला लगाना चाहिए जिससे लोगों की धनाजी महाराज के प्रति आस्था बढ़े। इसके अलावा पत्रिका के माध्यम से भी लोगों का अपने पंथ प्रवर्तक के प्रति लगाव बढाया जा सकता है।

धनावंश एक धार्मिक सम्प्रदाय है- इसलिए प्रत्येक धनावंशी का व्यवहार मर्यादित और धार्मिक होना चाहिए। ईश्वर के प्रति हमारी श्रद्धा हमारे व्यवहार में झलकनी चाहिए। धनावंशी के लिए कुछ धार्मिक परम्पराएं निर्धारित होनी चाहिये- जिनका पालन प्रत्येक धनावंशी को अनिवार्यत: करना चाहिए। जैसे- सुबह शाम भगवान की पूजा-आरती में भाग लेना, जीव मात्र पर दया करना, मांस-मदिरा का सेवन नहीं करना, किसी भी प्रकार के नशे से दूर रहना, साफ-सफाई से रहना, गुरुदेव धनाजी महाराज की स्तुति करना,घर में तुलसी का पौधा लगाना आदि। ये कुछ नियम हैं जिनका प्रत्येक धनावंशी को पालन करना चाहिए। इसकी शिक्षा प्रत्येक माता पिता को अपने बच्चों को बचपन से ही दी जानी चाहिए, तभी वह बच्चा बड़ा होकर इन संस्कारों को अपने व्यवहार में उतार पायेगा।

धनावंश में नवमहंतो के लिए कुछ योग्यताएं तय की जानी चाहिए क्योंकि महंत हमारे समाज सुधार में सबसे बड़ी भूमिका निभा सकते हैं, इसलिए यह आवश्यक है कि योग्य व्यक्ति को ही महंत बनाया जाए। महंत में धनावंश के प्रति समर्पण का भाव होना चाहिए। महंत के लिए न्यूनतम शिक्षा निर्धारित की जानी चाहिए। महंत कोई साधारण व्यक्ति नहीं होता है। पूरा समाज महंतजी के चरण धोता है। इसलिए महंत का भी यह कर्तव्य होता है कि वह समाज के पथभ्रष्ट लोगों को सही राह दिखाये। महंत को धनाजी महाराज के उपदेशों का प्रचार प्रसार करना चाहिए।

धनावंश के उत्थान में अध्यापक वर्ग अपनी महत्ती भूमिका निभा सकता है। अध्यापक वर्ग का बौद्धिक संपदा से सीधा जुड़ाव होता है और समाज से भी गहरा नाता रहता है।

शिक्षक का हमारे समाज में आज भी आदर सम्मान है। शिक्षक के विचारों को समाज तवज्जो देता है। समाज में कई प्रतिभाएँ है जो उचित मार्गदर्शन के अभाव में पिछड़ जाती हैं और एक साधारण जीवन जीने को मजबूर हो जाती हैं। अध्यापक वर्ग अपने आस पास समाज की ऐसी प्रतिभाओं को खोजकर उनका उचित मार्गदर्शन करें तो वह समाज और देश के विकास में अपना अमूल्य योगदान दे सकते हैं। अध्यापक कुछ आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को आर्थिक सहायता भी कर सकते हैं। केवल अध्यापक ही क्यों आर्थिक रूप से सक्षम प्रत्येक धनावंशी यदि समाज के आर्थिक रूप से कमजोर दो बच्चों की भी जिम्मेदारी उठा ले तो समाज की तरक्की होते समय नहीं लगता। वर्तमान समय में हमारे समाज के युवाओं की प्रशासनिक सेवाओं में भागीदारी न के बराबर है। हमें प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान कर उनको प्रशासनिक सेवाओं के लिए तैयार करना होगा।

धनावंश के उत्थान के लिए सबसे पहले हमें सांगठनिक तौर पर मजबूत होना होगा। वर्तमान में कई छोटे छोटे गाँवो में भी दलित भाइयों के अम्बेडकर संगठन है। जबकि हमारे समाज में तो तहसील स्तर पर भी सशक्त नेतृत्व दिखाई नहीं देता है। संगठन के सदस्यों का चुनाव लोकतांत्रिक तरीके से किया जाना चाहिये। जब हम सांगठनिक तौर पर मजबूत होंगे तो ही कोई ठोस निर्णय ले पायेंगे। सरकार से हमारी कोई मांग मनवाने के लिए भी हमें हमारे समाज को संगठित करना होगा। समाज के निर्णयों में अधिक से अधिक जनभागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए।

**नि:स्वार्थ कर्म करते रहो, जो भी होगा अच्छा होगा, थोड़ी देर से होगा,
पर जो होगा वो एकदम नया होगा।**

चिंतन ✻✻

धनावंशीय नारी

सुरेश स्वामी (चोयल)
धोलिया, लाडनूं

शादी से पहले लड़कियों को माँ-बाप के दबाव में जीना पड़ता है वहीं शादी के बाद उन्हें अपने पति की इच्छा अनुसार चलना पड़ता है। उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य यही है कि उन्हें अपने पति और बच्चों का ख्याल रखना है। महिलाओं के साथ न तो पुरुषों जैसा व्यवहार किया जाता है और न ही उन्हें पुरुषों जैसी अहमियत दी जाती है।

हमारे स्वामी समाज की समस्त प्रगति में नारी जाति चाहकर भी अपना योगदान दे नहीं पाती है। क्योंकि कम उम्र में विवाह दहेज, घरेलू हिंसा और कन्या भ्रूण हत्या जैसे भेदभाव का सबसे पहले खात्मा करना होगा। भारतीय संविधान में स्त्रियों को समानता का अधिकार एवं चुनाव का समान अधिकार, अभिव्यक्ति के समान अवसर के अधिकार प्रदान किए गए है, परन्तु फिर भी महिलाओं की वास्तविक स्थिति कुछ और ही है। उन्हें हम हमेशा की तरह घरेलू जिम्मेदारियां सौंपकर, पुरुष के अधीन कर देते है तथा उन्हें घर की सीमाओं के भीतर ही कैद कर रखा है। स्त्रियों के शिक्षा के अधिकार, स्वास्थ्य, शारीरिक एवं आर्थिक संसाधन तथा राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में अवसर की समानता पर भी रोक लगा रखी है। इसके अलावा स्त्रियों के विवाह, कार्य एवं जीवन से जुड़े महत्त्वपूर्ण फैसले लेने का भी अधिकार नहीं दिया गया। उनकी आवाज को रोक दिया जाता है।

बात चाहे राजनीति, खेल, मनोरंजन जगत, साहित्य अथवा तकनीकी की हो वो किसी भी क्षेत्र में खुलकर योगदान दे नहीं पाती है। आज की आधुनिक महिलाएं, इतनी कुशल, दक्ष एवं स्वयं सिद्धा है जिस कारण उसे शक्ति कहना गलत नहीं होगा। स्वामी समाज की महिलाएं अत्यन्त दृढ़ निश्चयी एवं महत्त्वाकांक्षी है। यह सत्य है कि एक स्वामी समाज की स्थिति का अंदाजा आप समाज की स्थिति को देखकर लगा सकते हैं। स्वामी समाज की महिलाओं का रास्ता गड्ढों तथा बाधाओं से भरा हुआ है, काफी प्रयासों के बावजूद भी समाज में महिलाओं के प्रति मानसिक परिवर्तन के विषय में बहुत धीमी गति से आगे बढ़ रहा है। इतने अधिक

कुछ चीजे कमजोर की हिफाजत में भी महफूज रहती है जैसे मिट्टी का गुल्लक, लोहे के सिक्के।

संख्या में कानून पारित होने के बाद भी महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराध तेजी से बढ़ रहे है।

जब कोई स्त्री एक हाथ के सहारे से अपने कामयाबी की सीढ़िया चढ़ रही होती है, वहीं दूसरे हाथ से वह अपने परिवारजन द्वारा प्रतिरोध का शिकार बन जाती है।

सैद्धांतिक रूप से भले ही महिला को समाज में ऊँचा स्थान दिया गया है। पर व्यावहारिक दृष्टि से देखा जाए तो यह एकमात्र एक औपचारिकता से ज्यादा कुछ था। महिलाओं को सामाजिक स्तर पर काम करने की मनाही है। किसी भी कार्य को शुरु करने से पहले उनकी राय लेना जरुरी नहीं माना जाता है। शादी से पहले लड़कियों को माँ–बाप के दबाव में जीना पड़ता है वहीं शादी के बाद उन्हें अपने पति की इच्छा अनुसार चलना पड़ता है। उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य यही है कि उन्हें अपने पति और बच्चों का ख्याल रखना है। महिलाओं के साथ न तो पुरुषों जैसा व्यवहार किया जाता है और न ही उन्हें पुरुषों जैसी अहमियत दी जाती है। हर जगह महिला–सम्मेलन, समाज–सुधारकों द्वारा विविध कार्यक्रम एवं महिला गोष्ठियां की जानी चाहिए। जिसमें अधिकतम आज की उन्नत व पढ़ी–लिखी नारी की सशक्त क्षेत्रों के पिछड़े हुए नारी वर्गों की स्थिति पर अधिक ध्यान देना चाहिए। शिक्षा से वंचित एवं आर्थिक रूप से कमजोर नारी पर विशेष ध्यान देना चाहिए। समाज द्वारा बनाए गए रीति–रिवाज मान्यताएं, परम्पराएं व रुढ़ियों से हटकर काम करने के प्रति उत्साहित करना चाहिए।

प्राचीन काल से चले आ रही मान्यताओं को तोड़कर नारी की शिक्षा के लिए जोर देना चाहिए। नारी की उन्नति के लिए उन्हें आत्मनिर्भर होकर अपने आत्मसम्मान को जाग्रत करना जैसी शिक्षा का देना अतिआवश्यक है। किसी भी समाज या देश के पास चाहे कितने भी प्राकृतिक साधन हो, पुरुष वर्ग चाहे कितना भी शिक्षित व सभ्य हो लेकिन वहां का नारी–वर्ग यदि अशिक्षित व असंस्कृत ही बना रहे, तो उस समाज को सभ्य, शिक्षित और समुन्नत किसी भी दृष्टि से नहीं कहा जा सकता है।

उन्नत और विकसित समाज या राष्ट्र कहलाने का गौरव तभी प्राप्त होगा। जब स्त्री भी पुरुषों के समान ही शिक्षित होकर आत्मनिर्भर बनेगी। नारी को चेतना, आत्मविश्वास एवं अपने अधिकारों के प्रति जाग्रत करना है। तभी शिक्षित होकर आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर होगी, पुरुषों को अपनी सोच में परिवर्तन लाना है। जिस प्रकार शरीर को भोजन की आवश्यकता है, उसी प्रकार से समाज को विकसित करने के लिए प्रत्येक नारी को शिक्षित करना जरुरी है। अत: महिलाओं को सामाजिक और राजनीतिक अधिकार, वित्तीय सुरक्षा, न्यायिक शक्ति और वे सारे अधिकार जो पुरुषों को प्राप्त है मिलना चाहिए।

अभी भी धनावंशी स्वामी समाज में प्रत्येक नारी को सम्मान प्राप्त नहीं है। उन्हें अच्छी शिक्षा देने से वंचित किया जाता है। सम्पति में उन्हें बराबरी का हक नहीं दिया जाता है। शिक्षा, धर्म, व्यक्तित्व और सामाजिक विकास में बराबर का योगदान नहीं दिया जाता है।

अभी भी बाल विवाह, पर्दा–प्रथा, अशिक्षा आदि विभिन्न सामाजिक कुरीतियों का समाज में प्रवेश है जिसने महिलाओं की स्थिति को हीन बना दिया तथा उनके निजी व सामाजिक जीवन को कलुषित कर रखा है।

समाज की प्रत्येक नारी को अच्छी से अच्छी शिक्षा दी जाए। शिक्षा एवं सम्पत्ति में समाज की प्रत्येक नारी को बराबर का हक मिले। नौकरी करने वाली नारी के साथ पुरुषों की मानसिकता में बदलाव जरुरी है। नौकरी करने वाली औरत के पति को औरत की कमाई खाने वाला कहकर चिढ़ाया जाता है। इस सोच में बदलाव जरुरी है। समाज की नारी को राजनीति, कारोबार, फौज, खेल तथा उद्यमी सभी क्षेत्रों में समाज के विकास के लिए हर प्रकार से उत्थान करना होगा।

बाल विवाह, भ्रूण–हत्या जैसे मामलों पर रोक लगानी है। एक लड़की की शिक्षा, एक लड़के की शिक्षा की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि लड़कों को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता है, किन्तु एक लड़की की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है। अत: इस प्रकार के पहलू पर ध्यान देकर नारी समस्या को दूर किया जा सकता है।

विभिन्न कानूनों के द्वारा महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार मिलने से उनकी स्थिति में परिर्वतन कर सकते है। किसी भी समाज की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है, वहां की महिलाओं की स्थिति। अत: समाज की सभी महिलाओं को अच्छी शिक्षा देकर समाज के उज्जवल भविष्य की संभावनाएं की जा सकती है।

श्रेष्ठ वही है जिसमें दृढ़ता हो, जिद नहीं।

आज समाज में महिला संगठनों की अति आवश्यकता है। हर जिला स्तर पर समाज की कम से कम 5 महिला लीडर्स का चुनाव हो। जिसमें कम से कम एक या दो निर्धन वर्ग से जरुरी है ताकि कार्य सुचारु रूप से चले। उन सभी को सामुदायिक समन्वय को ध्यान रखना चाहिए। उन सभी को पिछले नेतृत्व क्षमता से सम्बन्धित प्रशिक्षण दिया जाए ताकि संगठन ठीक प्रकार से कार्य करे।

कार्यकारिणी समिति अपने सदस्यों के बीच से एक वर्ष के लिए अध्यक्ष का चुनाव करेगी। समिति को कार्यविधि के दौरान किसी भी समय अध्यक्ष को हटाने व सदस्य के बीच में नया अध्यक्ष चुनने का अधिकार होगा। इसकी प्रक्रिया दो तिहाई बहुमत से होगी। अध्यक्ष की अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष इसका कार्य करेगा। अत: उसके बाद उसी में से सचिव व कोषाध्यक्ष का भी चुनाव करना होगा।

सकारात्मक आर्थिक एवं सामाजिक नीतियों के माध्यम से महिलाओं के पूर्ण विकास के लिए वातावरण बनाये। राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और सिविल क्षेत्रों में पुरुषों के साथ मानवाधिकारों और भौतिक स्वतंत्रता के साथ काम करें।

महिलाओं को समाज में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन में भागीदारी लेनी चाहिए। स्वास्थ्य देखभाल, सभी स्तरों पर सामाजिक सुरक्षा और सरकारी कार्यालय सम्बन्धित गतिविधियों पर ध्यान देना जरुरी है। समाज की महिलाओं को जिला संगठन कार्यकारिणी समिति की बैठक में संगठन के समुचित प्रबंधन के लिए पदाधिकारियों की संख्या को निश्चित करेगा तथा उनके काम को जिम्मेदारियों का निर्धारण करेगा।

जिला संगठन की बैठक में पदाधिकारियों के कार्यों में कार्यकुशलता न होने पर उन्हें बदले जाने का प्रावधान भी रखेगा। जिला संगठन की बैठक की शुरुआत किसी प्रेरणादायी व आत्मविश्वास से भरी प्रार्थना से होनी चाहिए ताकि उनमें आत्मविश्वास आयेगा और वे अपनी बातों को बेझिझक बैठक में रख सकेंगे। सचिव पिछली बैठक की कार्यवाही को पढ़कर सुनायेगा जिससे सभी को मालूम हो जाए कि पिछली बैठक में जो निर्णय लिए गये थे वे पूर्ण हुए है

आप धनावंशियो के लिए उपयोगी जानकारी

1. रामानंद जी के 12 शिष्य हुए, उनमें एक धनाजी थे ।
2. रामानंद जी के प्रथम शिष्य थे -अनन्तानंदजी यानि धनाजी के गुरू भाई ।
3. अनन्तानंदजी के एक शिष्य हुए कृष्ण दास जी पयहारी उन्होंने 16 वीं शताब्दी मे गलता आश्रम की स्थापना की, ये धनाजी के बाद हुए ।
4. कृष्ण दास जी पयहारी के दो शिष्य हुए 1-कील्ह दास जी दूसरे अग्र दास जी, कील्ह दास जी गलता पीठ के आचार्य हुए, यह रामावतों की एक बड़ी पीठ है ।
5. अग्र दास जी ने गलता से अलग हो कर रैवासा में नई पीठ की स्थापना की । उनका जन्म संवत 1553 में हुआ, उन्होंने दीक्षा संवत 1572 ग्रहण कर रामानंद सम्प्रदाय में एक नई परम्परा के अनुसार -रसिक सम्प्रदाय --की स्थापना की ।इस सम्प्रदाय के अनुसार भक्त भगवान श्रीराम की सखी बन कर अष्टयाम पूजा करता है ।
   तो, मेरे आदरणीय भाइयो धनावंशी पंथ का गलता और रैवासा से कोई सम्बन्ध नहीं है । चूँकि हम अपना कोई स्थान बना नहीं पाए हैं, इसलिए पुष्कर, गलता, रैवासा और भी न जाने कहां कहां जाकर संतुष्टि प्राप्त करते हैं । धुवांकलां में धनाजी के यहां माथा टेकना पंसद नहीं है । कोई धनावंशी उस स्थान पर अपना दावा तक करने की स्थिति में नहीं है । ईश्वर जाने यह अज्ञानता कितने वर्षों तक कायम रहेगी ? धनावंश का सन्नाटा इसे खाने में लगा हुआ है । अपने सम्प्रदाय के प्रति इतना पिछड़ापन दूसरी जगह देखने को नहीं मिलता । यह अपने में मस्त समप्रदाय है ।

हमारी फिदरत लड़ना है कभी राजनीति पर तो कभी धर्म के नाम पर।

एक धनावंशी से प्राथमिक अपेक्षाएं

◆◆◆ चेतन स्वामी

धनावंश एक धार्मिक पंथ है। छोटा सा समुदाय होते हुए भी इसके सैकड़ों मंदिर हैं। सैकड़ों मंदिरों का तात्पर्य हजारों लोग सात्विक और धार्मिक मनोवृत्ति के हैं। हमारे मंदिर पीढियों से हमारी धार्मिकता की पूर्ण पहचान बने हुए हैं।

पर-यहां मैं अपने बंधुओं से यह निवेदन करना चाहता हूं कि आध्यात्मिक और धार्मिक यात्रा का प्रस्थान गुरु महिमा से होता है कोई भी धनावंशी गुरु विहीन नहीं होना चाहिए। संतों ने कहा है-- गुरु कीजै रै गहला निगुरा न रहिला। हमें किसी बाहरी गुरु की आवश्यकता नहीं है। ठाकुर जी की सन्निधि में भक्त धनाजी महाराज को ही अपना गुरु मान लेना चाहिए। जब भी हमारे बच्चे बालक--बालिका पन्द्रह वर्ष के हो जाएं तो गुरु पूर्णिमा के दिन मंदिर में ले जाकर धनाजी महाराज का रक्षा सूत्र बांध देना चाहिए।

हर धनावंशी अपनी संतति को चाहिए कि संतों भक्तों की कथाएं सुनाएं । धनाजी महाराज की प्रेरणीय कथाएं तो अवश्य सुनाएं। संतों- भक्तों की कथाओं से बालकों के मन में शुद्धता और पवित्रता के भाव जन्म लेंगे और जीवनपर्यंत वे भाव विद्यमान रहेंगे। विचार करें-बाल्यकाल में जिस बालक को अच्छे संस्कार दिए जाएंगे-वह कभी व्यसनों के जाल में नहीं फसेगा और न ही उसकी आपराधिक मनोवृत्ति होगी।

हम धनावंशियों की ठाकुर जी में गहरी अनुरक्ति हो। नैमितिक जीवन में सत्संग को सर्वोपरि महत्व दें। इससे अधिक महत्व का तो स्वामी के लिए दूसरा कोई कृत्य है ही नहीं।

हमारे यहां धार्मिक ग्रंथों का पठन-पाठन अनिवार्य रूप से हो। श्रीमद्भगवद्गीता--श्रीमद्भागवत तथा रामचरितमानस को प्राथमिकता देवें।पुराण--महाभारत आदि अन्य धार्मिक ग्रंथों को भी पढते रहें। अपनी पढने की रुचि का विस्तार करें। घर के बालक-बालिकाओं से पढवाएं। आवश्यक नहीं है कि श्रीमद्भागवत जैसे ग्रंथों के लिए किसी बड़े आयोजन की जरूरत होती है। भागवत सप्ताह जो एक सप्ताह में सम्पन्न होती है--उसमें दस प्रतिशत कथा ही सुनाई जा सकती है। घर में रोजाना रूचि लेकर सामूहिक रूप से किसी ग्रंथ को सुनिए-फिर देखिए कैसा आनंद आता है और कितनी नई बातें जानने को मिलती है। आपको ग्रंथ का सम्पूर्ण मर्म जान पड़ेगा। जिन धनावंशी बंधुओं के घरों में मंदिर हैं-वे तो धन्य हैं। अपने मंदिरों की पुन: सुध लेवें। आप जानते हैं-मंदिर ज्ञान की पाठशाला होते हैं। मंदिर से पवित्र दूसरी कौन जगह होगी । मंदिर में पैर रखते ही मन प्रफुल्लित हो जाना चाहिए। मन से अमन से मंदिर में केवल आरती कर देने भर से कुछ नहीं होता। मंदिर से मन जुड़ना चाहिए। अनेक जगह हमारे मंदिर दुर्दशा को प्राप्त हो रहे हैं। जीर्णोद्धार इसलिए नहीं हो रहा--क्योंकि वह मंदिर आय नहीं दे रहा है। जब पुजारी शिथिल हो जाता है तो सामान्य जन की भी कोई रुचि नहीं रह जाती है। पुजारी के लिए तो मंदिर सब कुछ है। मंदिरों की उपेक्षा बड़ी नुकसानदायी होती है। ईर्ष्या--वैमनस्य और पारिवारिक टूटन के कारण भी मंदिर उपेक्षा के शिकार हैं। समझना पड़ेगा कि मंदिर आय के लिए नहीं भक्ति और भगवद् पूजा के लिए बनाए गए थे। हम ठाकुर जी की पूजा करते हैं--हमारे योगक्षेम की जिम्मेदारी उनकी है। हमारे मंदिरों की कारुणिक स्थिति कहीं कहीं तो आंखें भिगो देती है। मंदिरों में निरंतर कथा भागवत,कीर्तन पुजारी को चलाए रखना चाहिए। ऐसे भक्त और श्रोता बनते रहेंगे। मंदिर की गतिविधियों में पूरे परिवार को भाग लेना चाहिए तथा सभी को अपनी रुचि दिखानी चाहिए। हर धनावंशियों को अपनी धार्मिकताओं का खयाल रखना आवश्यक है ।

बड़ी जंग जीतने के लिए पहले आपस में एक होना पड़ता है।

आपके पत्र-आपकी भावनाएं

श्री धनावंशी हित मासिक पत्रिका के शुभारम्भ की असीम शुभकामनाएं एवं अनन्त मंगलकामनाएं। पत्रिका के अब तक चार अंक प्रकाशित हुए है। सभी स्तरीय एवं पठनीय है। सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक आलेख पढ़कर हर्षानुभूति हुई। डॉ. चेतनजी की चेतना धनावंशी सम्प्रदाय के उत्थान के लिए अग्रसर हुई है, आनन्दानुभुति हुई।

धनावंशी सम्प्रदाय में भक्त धनाजी से सम्बन्धित साहित्य का अभाव है। इस पत्रिका के प्रकाशान से इसकी पूर्ति हो सकेगी। जहां न पहुंच सके रवि, वहां पहुंचे कवि तथा जहां न पहुंचे कवि, वहां पहुंचे अनुभवी। आप जैसे अनुभवी विद्वान इस दिशा में प्रयत्नशील होकर सामाजिक जागृति का सद्प्रयास कर रहे हैं, आशा है समाज के बंधुओं का शैक्षिक, साहित्यिक एवं ऊर्जावान सहयोग प्राप्त होगा।

पत्रिका का सम्पादकी आलेख नई दिशा-दृष्टि प्रदान करता है। त्रुटिरहित मुद्रण, आकर्षक कवर पेज, स्तरीय कागज के विशद परिचर्चा स्तम्भ उल्लेखनीय है। युवा-जगत, नारी जगत, स्वास्थ्य परिचर्चा, साहित्यिक हलचल (कहानी, कविता, संस्मरण, साक्षात्कार, वृतांत आदि) स्थायी स्तम्भ भी आरम्भ करें तो उत्तम रहेगा। समाजोपयोगी पत्रिका प्रकाशन हेतु साधुवाद।

यह था पंचम अंक

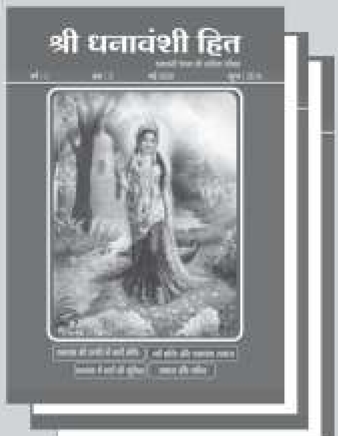

पुनश्च-श्री धनावंश का बौद्धिक उत्कर्ष विषयक मौलिक आलेख प्रस्तुत है।

-डॉ. शैलेन्द्र स्वामी, जोधपुर

जहाँ तक मेरी निजी जानकारी है , हमारे समाज में धनाजी महाराज को मानने वाले बहुसंख्यक हैं। धनावंशी स्वामी समाज की उत्पत्ति के बारे में भ्रम की स्थिति तभी समाप्त हो सकती , जब समाज के इतिहास लेखन का कार्य सम्पन्न हो जाये। धनावंशी स्वामी समाज के इतिहास लेखन का कार्य सम्पन्न करना या नहीं करना, यह आपका व्यक्तिगत अधिकार है।समाज आप से इस संबंध में सकारात्मक उम्मीद अवश्य रखता है।

-लक्ष्मण स्वामी, पलसाना

एकदम सही बात है सम्मानीय अधिकांश व्यक्तियों के मन में यह अदृश्य डर बैठ गया है और उन्हें लगता है कि शायद ऐसा होने पर हम और नीचे गिर जाएंगे और अपने आप को ब्राह्मण मानने पर तुले हुए हैं।कई साथी तो अपने आप को वैष्णव ब्राह्मण कहलाने में गर्व का अनुभव करते हैं , लेकिन सच्चाई कभी छुप नहीं सकती। आप अपना सार्थक प्रयास जारी रखें विरोध तो स्वयं भगवान कृष्ण का भी हुआ था।

-राधेश्याम गोदारा, नागौर

महोदयजी,कोई भी इतिहास भावनाओं से जुड़ा नहीं होता-घटना कर्म से जुड़ा होता है। सच्चाई को संकलन करके अगर इतिहास लिखा जाय तो आनेवाले भविष्य को वर्तमान से ये सवाल नहीं पूछना पड़ेगा

महामारी तब विकराल रूप ले लेती है जब हम बीमारी की बजाय बीमार से लड़ने लगते है।

कि मैं कौनसा स्वामी हूं? इतिहास कोई कहानी या कविता तो होता नहीं है। इतिहास तो एक नस्ल का दस्तावेज होता है।

-रघुवीर आनन्द स्वामी, अहमदाबाद

जय ठाकुर जी की सा । समाज के बुद्धिजीवी श्री लक्ष्मणजी रेंजर साहब से एक लंबी वार्ता हुई उसमें उन्होंने समाज के सुधार हेतु विचार रखे तथा विशेषकर उन्होंने श्री धनाजी के इतिहास व अपने समाज के इतिहास के बारे में बात कही– उनके हृदय में एक बहुत गहरी पीड़ा है कि हमारे समाज का इतिहास लिखा जाए तथा धूंआंकलां में धनाजी की जयंती बहुत बढ़िया हर्षोल्लास के साथ मनाई जाए। धना जयंती के लिए खुद प्रयास करेंगे तथा जागरूक बुद्धिजीवी धनावंशी समाजसेवियों की एक टीम बनाकर धुआंकलां का दौरा करके उसके बाद अंतिम रूप देंगे उनकी इस जिज्ञासा को परम भक्त श्री धन्ना जी महाराज संपूर्ण करेंगे। धनाजी के प्रति व समाज के प्रति उनका प्रेम अपार है। यह कार्य अति सराहनीय है।

-बस्तीराम स्वामी, मेड़तासीटी

आदरणीय जय ठाकुर जी की, इस प्रतिस्पर्धा के युग में धन्ना वंशी स्वामी समाज को अग्रिम पंक्ति में खड़ा करने के लिए आपने धन्ना वंशी नारियों से सहयोग की अपील की यह बहुत ही अच्छी पहल है इतिहास गवाह है स्त्री जाति का हर क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ योगदान रहा है मुझे पूर्ण विश्वास है हमारी माताएं बहने पुत्रियां समाज उत्थान कार्य में अपना सर्वोच्च योगदान देगी मैं नारी शक्ति को नमन करता हूं.

-भंवरलाल वैष्णव, जयपुर

कितना हीं अच्छा काम कोई क्यों न करें समाज की खामोशी ही नहीं बल्कि आलोचना भी होगी। जो आगे हो कर कुछ करना चाहता है उसकी टांग खिंचाई होगी।

आप अपना आराम का समय छोड़ कर समाज के लिए कुछ करना चाहते हो समाज इसको नकारात्मकता से देखेगा, क्यों की मानव स्वभाव ही ऐसा ही है। छोटा मुंह बड़ी बात वाली बात है कि जहां तक मेरी समझ है के अनुसार ९५ प्रतिशत लोग या तो चुप रहते हैं या बुराई करते हैं ।

मेरा अनुभव ये ही कहता है कि उन 5 प्रतिशत लोगों का साथ ले कर अपने हिसाब से कार्य करते रहें।

-गजानन स्वामी, कानूता

तसल्ली से सोचें

अगर धनावंश एक धर्म पंथ और सम्प्रदाय है तो इसकी यात्रा परम पूजनीय धनाजी महाराज के साथ शुरु होती है। अगर धनाजी के प्रति आपकी श्रद्धा किसी कारण से नहीं है तो आप अपने पंथ को समाप्त ही समझो।

अगर मन में संतोष है तो आप दुनिया के सबसे अमीर व्यक्तियों में शुमार है।

श्री धनावंश हित में विज्ञापन सहयोग करने वाले धनावंशी बंधु

1. श्री रामचंद्र स्वामी, स्वामियों की ढाणी
2. श्री रघुवीर आनन्द स्वामी, अहमदाबाद
3. श्री सुखदेव स्वामी, अहमदाबाद
4. श्री लक्ष्मणप्रसाद स्वामी, पलसाना
5. श्री पदमदास स्वामी, बीदासर
6. श्री गोपालदास स्वामी, पालास
7. श्री गोविन्द स्वामी, हैदराबाद
8. श्री श्रवणकुमार बुगालिया, दिल्ली
9. श्री भागीरथ बुगालिया, दिल्ली
10. श्री गोपालदास महावीर स्वामी, थावरिया
11. श्री बृजदास स्वामी पुत्र श्री सीतारामदास परिव्राजक, सूरत
12. श्री ओमप्रकाश स्वामी, पाली
13. डॉ. घनश्यामदास, नोखा
14. श्री मनोहर स्वामी, अजीतगढ़
15. श्री गुलाबदास स्वामी, जोधपुर
16. श्री बनवारी स्वामी, स्वामियों की ढाणी
17. श्री त्रिलोक वैष्णव, जोधपुर

उपरोक्त सभी धनावंशी बंधुओं का आभार। अन्य जनों से भी निवेदन है कि इस पत्रिका के सुचारु प्रकाशन हेतु अपना विज्ञापन सहयोग प्रदान कर कृतार्थ करें।-प्रकाशक

पत्रिका के विशिष्ट सहयोगी

सांवरमल स्वामी, आबसर
अर्जुनदास स्वामी, हरियासर
देवदत्त स्वामी, सूरत
लालचन्द स्वामी, धोलिया
बजरंगलाल स्वामी, लालगढ़
प्रेमदास स्वामी, खिंयाला

श्री धनावंशी हित

यह पत्रिका धनावंशी समाज की एकमात्र पत्रिका है। कृपया इसके प्रचार-प्रसार में अपना योगदान प्रदान करें।

- पत्रिका में विज्ञापन, बधाई संदेश, सूचना, समाचार तथा रचनाएं भिजवाकर अनुगृहीत करें।
- यह अंक आपको कैसा लगा? अपनी राय से अवगत करवायें।
- पत्रिका का सालाना शुल्क 200/- रुपये है। कृपया सदस्य बने।
- **पता-श्री धनावंशी हित, धनावंशी प्रकाशन, कालू बास, श्रीडूंगरगढ़-331803 (बीकानेर) * मो.: 9461037562**

धर्म परायण फूलादेवी नहीं रही

खिंयाला। श्रीमती फूलादेवी धर्मपत्नी स्व. भोलदासजी स्वामी का स्वर्गवास 26 मई 2020 को हो गया। आप श्री रामनिवास, प्रेमदास एवं जगदीश बिडियासर की माताश्री थी। वे एक धर्म परायण सदाचारों का पालन करने वाली महिला थी। श्री धनावंशी हित पत्रिका शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना प्रकट करती है।

धनावंशी स्वामी की मूल पहचान क्या है?

वह विनम्र, संयमी, चरित्रवान और
सच्चा तथा संस्कारी हो ।
सदैव भक्ति के भावों से अनुप्राणित होकर,
प्रभु भक्ति में लीन रहे ।
किसी भी प्रकार का व्यसन न हो ।
जीवन में सरलता और सादगी हो,
दिखावे से कोसों दूर हो ।
मिथ्याचारी न हो ।
हर धनावंशी उपरोक्त गुणों से संवलित होना चाहिए ।

सदस्यता शुल्क एवं अन्य भुगतान निम्न खाते में करें।

Dhanavanshi Prakashan
A/c No. - 38917623537
Bank - State Bank of India
Branch - Sridungargarh
IFSC code - SBIN0031141

कट्टरपंथिता सबसे घातक बीमारी है।
सामने वाले के सिर्फ गुण ही दिखाई देते है, अवगुण उनमें एक भी दिखाई नहीं देता।

Regd. No. BKN/07/063/2017

LAXMI

MULTI SPECIALITY HOSPITAL

अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित पूर्णतया एसी अस्पताल

* जनरल फिजिशियन
* स्त्री रोग विशेषज्ञ
* यूरोलोजिस्ट परामर्श
* अस्थि रोग विशेषज्ञ
* एनस्थिसिया सुविधा
* होम्योपेथिक सुविधा
* अत्याधुनिक मशीनों द्वारा सभी प्रकार की जाँचे।

सुविधाएं

* सोनोग्राफी
* एसी लेबोरेटरी
* डिजिटल एक्स-रे की सुविधा
* वातानुकुलित वार्ड व कॉटेज
* एम्बुलेंस की सुविधा
* मेडिकल स्टोर
* कैन्टीन
* जनरेटर सुविधा

डॉ. घनश्यामदास स्वामी
MBBS MD (MEDICINE)

डॉ. हरिराम पेड़ीवाल
MBBS MS (SURGERY)

डॉ. नवीन स्वामी
BDS (DENTAL SURGERY)

डॉ. भरत ओझा
MBBS

डॉ. बी.एल. स्वामी
MD, DM (CARDIOLOGY)

डॉ. पी. आर. दैया
BHMS

मेजर एवं माइनर ऑपरेशन थियेटर

Peepli Chowk, NOKHA-334803 (Bikaner)
Ph. : 01531-222100, Mob.: 9119253153 laxmimsph@gmail.com

श्री धनावंशी हित के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएं

त्रिलोक वैष्णव

M.: 9414130595, 9982630595

SUNCITY LANDMARK & CO.

72, Keshav Nagar, Opp. Ashok Udhyan, Pal Road
Jodhpur-342008 (Raj.)
Email : trilokvaishnava@yahoo.co.in

स्थाई निवास

त्रिलोक वैष्णव पुत्र स्व. श्री मोहनदासजी वैष्णव (फागणिया)

91, केशव नगर, स्ट्रीट नंबर 4, पाल रोड, जोधपुर, राजस्थान-342008

If Undelivered Return To
सम्पादक : श्री धनावंशी हित
धनावंशी प्रकाशन
कालू बास, पोस्ट : श्रीडूंगरगढ़-331803
जिला-बीकानेर (राज.) मो.: 9461037562

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादक चेतन स्वामी द्वारा धनावंशी प्रकाशन, कालू बास, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा प्रकाशित एवं महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा मुद्रित ।